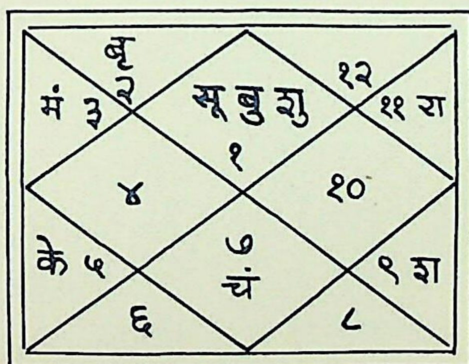
अयोध्याजातकम्

हिन्दीटीकासहितम्



श्रीः

अयोध्याजातकम्

हिन्दीटीकासहितम्

आयुर्वेदाध्यापकेन अयोध्याप्रसादशर्मणा विरचितम्

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई

संवत् २०४६ सन् १९८९

सूची मूल्य ८ रुपये मात्र

मुद्रक व प्रकाशक–
खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
बम्बई–४०० ००४ के लिए
दे. स. शर्मा मैनेजर द्वारा
श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, खेतवाड़ी, बम्बई ४ में मुद्रित,

प्रस्तावना

देखना चाहिये कि, इस संसारमें परमात्मा ने ज्योतिषशास्त्ररूपी एक कैसा अद्भुत रत्न पैदा किया है कि, जिसके द्वारा संपूर्ण प्राणियोंको तीनों जन्म और जन्ममरणका हाल सूचित होता है। ब्रह्माजीने जिस समय वेदके चार भाग किये उसी समय छः अंग-शिक्षा १, कल्प २, व्याकरण ३, निरुक्त ४, छन्द ५, ज्योतिष ६ ये बनाये। तहां व्याकरणको वेदका मुख, ज्योतिषको नेत्र, निरुक्तको कर्ण, कल्पको हस्त, शिक्षाको नासिका, छन्दको दोनों पग बनाये हैं और सिद्धांत-शिरोमणिका भी यही मत है—

"शब्दशास्त्रं मुखं ज्योतिश्चक्षुषी श्रोत्रमुक्तं निरुक्तं च कल्पं करौ। या तु शिक्षास्य वेदस्य सा नासिका पादपद्मद्वयं छन्द आद्यैर्बुधैः ॥ १ ॥"

परंतु इन अंगोंमें मुख्यता नेत्रोंकी ही है।

और लौकिकमें व्यवहार बहुत करके जातकसे जादा पड़ता है, सो मैंने अपनी लघु बुद्ध्यनुसार अयोध्या-जातक नाम करके ग्रन्थ ब्राह्मणोंके उपकारार्थ संग्रह किया इसमें कहीं अशुद्ध रह गया हो सो दया करके क्षमा कीजिये।

इति ग्रन्थकर्ता आयुर्वेदाध्यापक-

अयोध्याप्रसादशर्मा



श्री:

अयोध्याजातकस्य

विषयानुक्रमणिका

इति अयोध्याजातकस्य विषयानुक्रमणिका

———

श्रीगणेशाय नमः

अयोध्याजातकम्

हिन्दीटीकासहितम्

मंगलाचरणम्

अयोध्याजातकं वक्ष्ये नमस्कृत्य सदाशिवम् ।
नाम्नाऽयोध्याप्रसादोऽहं लोकोपकृतिहेतवे ॥ १ ॥

मैं जो अयोध्याप्रसाद हूं सो अयोध्या नाम जातक कहूं हूं । क्या करके ? सदा कल्याणके करनेवाले जो शिव उनको नमस्कार करके । किस प्रयोजनके अर्थ ? संसारके उपकारके अर्थ ॥ १ ॥

अभक्ते रिक्तपाणौ च दैवज्ञो यत्प्रभाषते ।
प्रश्ने न तथ्यमायाति यदि शंभुः स्वयं वदेत् ॥२॥

भक्तकरके रहित हो खाली हाथ होकरके दैवज्ञ जो पंडित है उससे प्रश्न करे तो उस प्रश्नका यथार्थरूपसे उत्तर नहीं होता है, जो महादेव आप ज्योतिषी हो करके क्यों न कहें ॥ २ ॥

प्रथम इष्ट बनानेकी रीति

चाहे जिस समयका इष्ट बनाना हो पहिले दिनमानमेंसे आधा करे फिर घटी जोड़नी हो सो जोड़. २॥ घटीका १ घंटा; ६० पलकी एक घटी और २॥ पलका १ मिनट होता है ॥

उदाहरण—अनुमान किया कि हमको २। बजेका इष्ट बनाना है और २६।५२ का दिनमान है, तो १३।२६ का मध्याह्न हुआ, इसमें २॥ ढाई घंटेकी घटी ६।१५ जोड़ दो सोई इष्ट हो जायगा, १९।४१ जो इष्ट हुआ इसी क्रमसे इष्ट निकाल लेना चाहिये ॥

इष्टपरसे लग्न निकालनेका क्रम

सूर्यांशसमकोष्ठेषु इष्टं संयोजयेत्तदा ।
तत्समं लग्नमाप्नोति दैवज्ञाश्च मुनीश्वराः ॥१॥

सूर्यांशका जो कोष्ठका अंक है उसको इष्टमें जोड़ देना, जुड़े हुए अंकोंको सारणीमें देखकर लग्न जान लेना ॥१॥

प्रथम सूर्यके अंश ज्योतिषी स्वदेशी पंचांगकी लग्नसारणीमें सूर्यकी राशि और अंश देखे। प्रथम लग्नसारणीमें राशिका कोठा नीचे होता है और अंशोंका कोठा ऊपरका होता है। जिस कोठेमें सूर्यकी राशि और अंशोंका योग हो उस कोठेमें जो ऊपरके अंक हैं वे इष्टकालके घटियोंमें जोड़े और जो नीचेके अंक हैं उनको इष्टकालके पलोंमें जोड़े वह जोड़ भये घटीपलोंके अंक जिस राशिके कोठेमें उस राशिको ही तत्कालकी लग्न कहना और वह कोठा जितने अंशोंके नीचे आया हो उतनेही लग्नके अंश

जाने, इष्टयुक्त जुड़े हुए जो अंक सारणीमें देखे जाते हैं वोही लग्नके कला विकला कहाते हैं ॥

लग्नसे इष्ट निकालनेका क्रम

लग्नके जो कला विकला अंक होवें उसीमें अंक कोष्ठकका घटी पल घटानेसे बाकी जो रहे उसीको इष्ट जानना चाहिये ॥

नक्षत्रनामानि

अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी मृगः ।
आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्योऽऽश्लेषा चैव मघा तथा ॥ १ ॥
पूर्वाफा चोत्तरा हस्तश्चित्रा स्वातिर्विशाखिका ।
राधा ज्येष्ठा तथा मूलं पूर्वाषाढस्तथोत्तरा ॥ २ ॥
अभिजिच्छ्रवणश्चैव धनिष्ठा शततारका ।
पूर्वाभाद्रोत्तराभाद्रे चान्तिमं भं चं रेवती ॥ ३ ॥

अर्थ स्पष्ट है ॥ १–३ ॥

उत्तराषाढपादोऽन्त्यश्चाद्यस्तिथ्यंशकश्रुतेः ।
अभिजिद्भोग इत्येष पातिवेदाऽर्गलादिषु ॥ ४ ॥

उत्तराषाढ़ाके अन्तका एक चरण, श्रवणके आदिका पन्द्रहवां हिस्सा इसमें अभिजिद्भोग करता है पातिवेद। एकार्गलको आदि लेकर समझ लेना ॥ ४ ॥

अथ होडाचक्रम्

चूचेचोला पदेष्वाश्वे लीलूलेलो यमस्य च ।
आइऊए यमेऽग्नेभे ओवावीवू तथाऽर्कभे ॥ १ ॥
वेवोकाकी मृगे ख्याता कुघङच्छास्तु रौद्रभे ।
केकोहाही त्वदितिभेहूहेहोडाश्च पुष्यभे ॥२॥
डीडूडेडो यमे सार्पे मामीमूमे मघाभिधे ।
मोटाटीटू तथा भाग्ये टेटोपाप्यर्यमर्क्षके ॥ ३ ॥
पूषाणाठा तथा हस्ते पेपोरारीति चित्रभे ।
रूरेरोता तथा स्वातौ तीतूतेतो द्विदैवभे ॥ ४ ॥
नानीनूने क्रमान्मैत्रे नोयायीयू इतीन्द्रभे ।
येयोभाभीति मूलाख्ये भूधाफाढा जलस्य भे ॥५॥
भेभोजाजीति निस्वर्क्षे जूजेजोखाभिजिद्भवेत् ।
खीखूखेखो श्रुतौ ज्ञेया गागीगूगे च वासवे ॥६॥
गोसासीसू जलेशर्क्षे सेसोदादीन्त्यजांघ्रिभे ।
दूझाथञ तथोपांत्ये देदोचाचीति पौष्णभे ॥ ७ ॥
इति प्रोक्तोयमे पद्ये वर्णानामाद्रिजा स्फुटा ।
ज्ञेया मेषादिराशीनां नवभिर्नवभिः पदैः ॥ ८ ॥

अर्थ स्पष्ट है ॥ १–८ ॥

अथ भचक्रे राशिव्यवस्था

अश्विनी भरणी मेषः कृत्तिकापाद एव च ।
तत्पादत्रितयं ब्राह्मं वृषः सौम्यदलं तथा ॥ १ ॥
सौम्यार्द्धमार्द्रा मिथुन आदित्यचरणत्रयम् ।
तत्पादः पुष्यमाश्लेषा राशिः कर्कटकः स्मृतः ॥२॥
पित्र्यं भागमथार्यम्णो भागः सिंहः प्रकीर्तितः ।
तत्पादत्रितयं कन्या हस्तश्चित्रार्द्धमेव च ॥ ३ ॥
तुला चित्रा दलस्वाती विशाखाचरणत्रयम् ।
तत्पादं मित्रदैवत्यं ज्येष्ठा वृश्चिक उच्यते ॥४॥
मूलवाप्यं तथा धन्विः पादो विश्वेश्वरस्य च ।
तत्पादत्रितयं विष्णुर्मकरो वासवं दलम् ॥ ५ ॥
तद्दलं वारुणं कुम्भस्तथाऽजचरणत्रयम् ।
तत्पादमेकं मीनः स्यादहिर्बुध्नं न रेवती ॥ ६ ॥

अश्विनी, भरणी, कृत्तिकाके एक चरणतक मेषराशि होती है और कृत्तिकाके तीन चरण रोहिणी मृगशिरके दो चरणतक वृषराशि होती है ॥१॥ मृगशिरके दो चरण और आर्द्रा पुनर्वसुके तीन चरणतक मिथुनराशि होती है, पुनर्वसुका एक चरण पुष्य आश्लेषा नक्षत्रतक कर्कराशि होती है ॥२॥ मघा पूर्वा उत्तराके एक चरणतक सिंहराशि

होती है, उत्तराके तीन चरण हस्त और आधी चित्रातक कन्याराशि होती है ॥३॥ आधी चित्रा स्वाति विशाखाके तीन चरणतक तुलाराशि होती है, विशाखाका एक चरण अनुराधा ज्येष्ठाके अंततक वृश्चिकराशि होती है ॥ ४ ॥ मूल पूर्वाषाढ़ा उत्तराषाढ़ाके एक चरणतक धनराशि होती है, उत्तराषाढ़ाके तीन चरण श्रवण धनिष्ठाके दो चरणतक मकरराशि होती है ॥ ५ ॥ आधी धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदाके तीन चरणतक कुंभराशि होती है, पूर्वाभाद्रपदाका एक चरण और उत्तराभाद्रपदा रेवतीके अंततक मीनराशि होती है ॥ ६ ॥

आधानके चरगृहे दशमे प्रसूतिस्त्वेकादशे स्थिरगृहेऽप्युभयेऽर्कमासाः । शीर्षोदयैश्चशिरसाऽप्युभये कराभ्यां पृष्ठोदयैश्च जननं भवतीह पद्भ्याम् ॥१॥

जिस प्राणीका गर्भाधान चरराशिवर्ती लग्नमें होता है उसमें प्राणीका जन्म दशवें मासमें होता है और स्थिरमें हो तो ग्यारहवें मासमें प्रसव कहना और द्विस्वभावमें हों तो बारह मासमें प्रसव कहना ॥ १ ॥

अथ नालवेष्टितजन्मज्ञानम्

लग्नेषु सिंहाजवृषस्थितेषु तत्स्थे कुजे सूर्यसुते च ।

यद्वा । भार्कोऽर्कजो भांशसमे च गात्रः स्यादर्भको नालविवेष्टिताङ्गः ॥ २ ॥

मेष, वृष, सिंह इन राशियोंमेंसे कोई राशि लग्नमें स्थित हो उनमें मंगल वा शनि स्थित हो तो नालमें लिपटा हुआ बाल उत्पन्न हुआ जानो. सूर्यसहित शनि जिस नवांशमें ऊगे हो उसी अंगमें कालपुरुषके नाल लिपटा हुआ कहो ॥ २ ॥

अथ कोशवेष्टितयमलयोग:

रवौ चतुष्पदे स्थिते द्विदेहसंस्थितैः परैः ।
बलान्वितैस्तदा यमौ स एव कोशवेष्टितौ ॥ ३ ॥

सूर्य चतुष्पदराशि अर्थात् मेष, वृष, सिंह, धनका परार्ध, मकरका पूर्वार्ध इनमेंसे किसीमें बलसहित स्थित हो तो एक जेरसे लपटे हुए दो जुड़े हुए बालक पैदा होते हैं ॥ ३ ॥

अथ सदंतसूतियोग:

सोमस्य भांशोपगतौ यमारौ बालं सदन्तं कुरुतः प्रसूतौ । कुलीरलग्ने हिमगुस्तदा चेन्मन्दारदृष्टे स तु कुब्जकः स्यात् ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्या मिथुन राशिमें

अथवा इनके नवांशमें शनि भौम ये दोनों स्थित हों तो उस बालककी उत्पत्ति दंतकरके सहित कहना चाहिये, कर्क लग्न हों उसमें चन्द्रमा स्थित हो उसको शनैश्चर या मंगल देखते हों तो बालक कुबड़ा पैदा होता है ॥४॥

अथ मासेषु दन्तोत्पत्तिफलम्

मासे चेत्प्रथमे भवेत्सदशनो बालो विनश्येत् स्वयं
हन्यात्संक्रमतोऽनुजातभगिनीमात्रग्रजान् द्व्यादिके
षष्ठादौ लभते हि भोगमतुलं तातात्सुखं पुष्टतां
लक्ष्मीसौख्यमथो जनौ सदशनो वोर्ध्वस्वपित्रादिहा ५।

बालकके पहिले महीनेमें दांत ऊगें तो स्वयं नष्ट होवे, दूसरेमें कनिष्ठ भाईको, एवं ३ में भगिनी, ४ में माता, ५में ज्येष्ठभ्राताको नाश करे। छठेमें बहुत भोग, सातवेंमें पितासे सुख, ८ में पुष्टता, ९ में धन, १० में सौख्य, ११ में सुख होवे, यदि जन्मतेही दंतसहित होय अथवा पहिले ऊपरके पंक्तिके दांत आवें तो पित्रादिकोंका नाशकारक होता है ॥ ५ ॥

अथ मूकयोग:

कर्कालियंत्यांतगैः पापैर्भांत्यस्थे वा वृषे विधौ ।
मूकः पापेक्षितः सद्भिर्दृष्टे गोः स्याच्चिरेण तु॥६॥

कर्क वृश्चिक मीन इन राशियोंके नवम नवांशपर संपूर्ण पापग्रह स्थित हों और चंद्रमा वृषराशिमें स्थित हो उसको पापग्रह देखते हों तो वह बालक मूक होता है और पूर्वोक्त योग हो, चंद्रमाको शुभग्रह देखते हों तो वह बालक बहुत दिनोंमें बोलता है ॥ ६ ॥

अथ पंगुयोगः

लग्नेझषे चन्द्रयुते च यद्वा सिंहाजचापान्तगतैश्च पापैः
वृषे विधावर्कयमारदृष्टे पंगुर्नरः स्याच्छुभदृष्टिहीने ७

मीनराशि लग्नमें स्थित हो उसमें चंद्रमा युक्त हो सिंह, मेष, धन इनके अंत्यनवांशपर पापग्रह स्थित हो, यह एक योग। अथवा वृषराशिमें चंद्रमा स्थित हो उसको सूर्य, शनैश्चर, मंगल देखते हों शुभग्रहकी दृष्टि न होय तो वह बालक पंगु अर्थात् लूला होता है ॥ ७ ॥

अथ जड़योगः

क्रूरग्रहैः संधिगतैः शुभालोकनवर्जितैः।
हिमांशुसहितैर्बालो जडः स्यान्नात्र संशयः ॥८॥

पापग्रह संधिगत हो अर्थात् पूर्वोक्त राशियोंके नवम नवांशमें स्थित हो; शुभग्रह कोई न देखते हों, चंद्रमा

कर्कसहित हो तो वह बालक जड़ होता है अर्थात् ज्ञानरहित मूर्ख होता है ॥ ८ ॥

अथान्धयोगः

सिंहे विलग्ने रविशीतभानू मंदारिदृष्टौ कुरुते नरोऽन्धः
शुभाशुभैर्बुद्बुदनेत्रयुग्मं हिनस्त्यजइनोऽन्त्ययोगात्

सिंहलग्न हो उसमें सूर्य चंद्रमा स्थित हों उनको शनैश्वर मंगल देखते हों तो वह बालक अंध उत्पन्न होता है और पूर्वोक्त योग हो उनको शुभग्रह भी देखते हों तो उस बालकके नेत्रोंमें फुल्ली कहना उचित है और सिंहलग्न हो बारहवें स्थानमें सूर्य हो और मंगल शनैश्वर देखते हों तो दहिने नेत्रसे काना कहना चाहिये। उसी प्रकार सिंहलग्न हो व्ययस्थान उसमें चंद्रमा हो उसको मंगल शनैश्वर देखते हों तो वामनेत्रसे काना कहना परन्तु सिंहलग्न व्ययस्थानवर्ति हो तो काना योग कहना चाहिये ॥ ९ ॥

अथ विलोमजन्मज्ञानम्

विलग्नगेऽर्कजे विधौ व्यये च नीचगे रवौ ।
विलोमजन्मभूमिजे सभार्गवे त्वनालिकः ॥१०॥

जन्मलग्नमें शनि चन्द्र हों और बारहवें नीचराशिगत सूर्य हो उस बालकका उलटा जन्म कहना और पूर्वयोग

रहित मंगल शुक्रसहित स्थित हो तो बालक नालरहित उत्पन्न होता है ॥ १० ॥

अथ क्लेशान्वितजन्मज्ञानम्

विलग्नभांशाधिपतौ विलग्ने विलोमसंस्थैः सति विग्रहःस्यात्। क्लेशान्वितं व्यस्तगतं च जन्म शुभैः प्रदृष्टे च ततः सुखं हि ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्ननवांशपति दोनों लग्नमें विलोम स्थित हों तो उस बालकका जन्म विग्रहसे हो और पूर्वोक्त योगरहित लग्ननवांशपति व्यस्तगत हों तो उस बालकका जन्म क्लेशकरके कहना और वही पूर्वयोग हो तो भी शुभग्रह देखते हों तो उस बालकका जन्म सुखपूर्वक होता है ॥ ११ ॥

अथ जारजातज्ञानम्

न प्राग्विलग्नं च विधुं प्रपश्येज्जीवार्कयुक्तं सितगुं च यद्व। सार्के विधौ पापयुतेऽथ वा चेत्स्याज्जार-जातस्य तदा हि जन्म ॥ १२ ॥

जन्मलग्नको चंद्रमा न देखता हो और बृहस्पति लग्न वा चंद्रमाको न देखता हो तब एक योग, अथवा सूर्ययुक्त चंद्रमाको बृहस्पति न देखता हो तब द्वितीय योग,

अथवा सूर्य चन्द्रमायुक्त होकर पापग्रसित हो तो तीसरा, इन योगोंमें पैदा हुआ मनुष्य परपुरुषसे उत्पन्न हुआ जानना चाहिये ॥ १२ ॥

अन्यच्च

सुरेज्यदृष्टे तनुगेऽथवेज्ये देवेज्यवर्गोज्झित एष चन्द्रे । स पापकर्केण युतेऽथ चन्द्रेस्याज्जारजातस्य तदा हि जन्म ॥ १३ ॥

बृहस्पतिकरके दृष्ट चन्द्रमा स्थित हो लग्नमें बृहस्पतिके वर्ग अर्थात् षड्वर्गमें चन्द्रमा न हो तब एक योग और पापग्रहसहित चन्द्रमा सूर्ययुक्त हो तो भी मनुष्य जारजात अर्थात् परपुरुषसे पैदा कहना ॥ १३ ॥

नीचोपगाः सूर्यसुरेज्यचन्द्राः कुर्वन्ति ते जन्मनि जारजातम् । यद्वा तनौ सूर्यसुतेन दृष्टाः शुभैश्च चन्द्रोदयभार्गवाख्याः ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नीचराशिमें प्राप्त सूर्य, चंद्र, बृहस्पति हों वह बालक परपुरुषसे उत्पन्न कहना अथवा चन्द्रमा शुक्रलग्नमें स्थित हो उसको शनैश्चर देखता हो तो भी जारजात कहना ॥ १४ ॥

अजारजातयोगः

चन्द्रे गुरुक्षेत्रगतेऽथ वा चेत्सुरेज्ययुक्तेऽन्यग्रहे स्थितेज्ये। गुरोर्द्दकाणेऽथ नवांशके वा न जारजातस्य भवेत्प्रसूतिः ॥ १५ ॥

चन्द्रमा बृहस्पतिके स्थानमें हो अथवा बृहस्पति करके चन्द्रमा युक्त हो वा दृष्ट हो अथवा गुरुके द्रेष्काण वा नवांशमें चन्द्रमा स्थित हो अथवा इसी प्रकार लग्न हो तो वह मनुष्य अपनेही बापकरके पैदा कहना ॥ १५॥

अथ कारागारे जन्मज्ञानम्

लग्नेन्दुभ्यां द्वादशे सूर्यपुत्रे गुप्त्यां सूतिर्वीक्ष्यते पापखेटैः। लग्ने कर्के वृश्चिके मन्दयुक्ते गर्तायां स्याच्चन्द्रयुक्ते प्रसूतिः ॥ १६ ॥

जन्मलग्नमें बीचमें चन्द्रमा स्थित होय और बारहवें स्थानमें पापग्रहोंसे दृष्ट शनैश्चर स्थित होय तो ऐसा योग पड़े वह मनुष्य बन्धनके स्थानमें पैदा कहना। वृश्चिक या कर्कलग्न जन्मकालकी होय उसमें शनि स्थित होय चंद्रमासे युक्त अथवा दृष्ट होय तो उस बालकका जन्म गड्ढे या खांईमें कहना ॥ १६ ॥

अथ नौकाजन्मज्ञानम्

लग्ने सौम्ये वेश्मगे सौम्यखेटे
प्रालेयांशौ स्वर्क्षगे पूर्णदेहे ।
आये लग्ने द्यूनगे वा मृगाङ्के
गर्भो नूनं सूयते नावसंस्थः ॥१७॥

जन्मलग्नमें बुध स्थित हो और चौथे स्थानमें शुभग्रह स्थित होय और पूर्ण चन्द्रमा कर्कराशिमें स्थित होय अथवा जलचरराशि लग्नमें होय और लग्न वा सप्तम एक स्थानमें चन्द्रमा स्थित होय तो निश्चयकरके बालकका जन्म नावमें कहना ॥ १७ ॥

ऊषरभूम्यादिजन्मज्ञानम्

लग्ने नीरे मन्दयुते दृष्टे चन्द्रार्कचन्द्रजे ।
ऊषरे देवतागारे क्रीडागेहे क्रमात्सवः ॥ १८ ॥

शनिश्चर जलराशिमें स्थित होकर लग्नमें स्थित होय उसको चन्द्रमा देखता होय तो उसका ऊषर भूमिपर जन्म कहना, पूर्वोक्त योग होय शनिको सूर्य देखता होय तो उस बालकका जन्म देवताके स्थानमें कहना और पूर्वोक्त योगरहित शनिको बुध देखता होय तो बालकका

जन्म क्रीडागेह अर्थात् खेलनेकी जगह व विहारभूमिमें कहना ॥ १८ ॥

श्मशाने जन्मज्ञानम्

पुंलग्नस्थे भानुसुते श्मशाने शैल्यके गृहे ।
भूपालये च गोष्ठे च देवागारे मखालये ॥ १९ ॥
वीक्षितैर्भौमसौम्येन्दुशुक्रार्कगुरुभिः क्रमात् ।
प्रसवोऽयं समाख्यातः सत्यलल्लादिसूरिभिः ॥२०॥

पुरुषलग्न अर्थात् मिथुन कन्या तुला कुंभ धनका पूर्वार्ध इन मनुष्यराशियोंमेंसे किसी राशिमें स्थित शनि लग्नमें स्थित होय तो श्मशान अर्थात् मर्घट शैल्यक अर्थात् राजगिरी करनेवालेके मकानमें, राजाके घरमें, गोशाला, देवस्थान, यज्ञशालामें क्रमसे जन्म कहना ॥ १९ ॥ अर्थात् भौम बुध चंद्रमा शुक्र सूर्य बृहस्पति इन करके देखते होय क्रमसे प्रसव कहा गया। सत्याचार्य्य लल्लाचार्यको आदि लेकर पहिले आचार्योंने नरराशियोंमेंसे किसी राशिमें स्थित शनि लग्नमें बैठा हो उसको मंगल पूर्णदृष्टिसे देखता हो तो उस बालकका जन्म मुर्दा फूंकनेकी जगह होना चाहिये और जो बुध देखता होय तो उस बालकका जन्म राजगिरी करनेवालेके मकानमें कहना

और जो चंद्रमा देखता होय तो राजाके घरमें जन्म कहना, शुक्र देखता होय तो गोशालामें जन्म कहना, सूर्य देखता होय तो देवालयमें जन्म कहना, गुरु देखता हो तो अग्निशालामें जन्म कहे हैं ॥ २० ॥

अरण्ये जन्मज्ञानम्

यदैकराशिगौ लग्नश्चन्द्रो दृष्टिविवर्जितौ ।
विजने प्रसवः प्रोक्तो मणित्थाद्यैश्च सूरिभिः ॥ २१ ॥

एक राशिमें लग्न और चन्द्रमा हो लग्नगत एकही नवांशमें हो उनको कोई ग्रह न देखता हो तो उस बालकका जन्म जिस जगह मनुष्य न रहते हों अर्थात् जंगलमें जन्म कहना और जो पूर्वोक्तयोग हो और लग्नमें बहुतसे ग्रह स्थित हों और चन्द्रमाको देखते हों तो बालकका जन्म जहां बहुतसे स्त्रीपुरुष हों वहां कहना चाहिये, ऐसा मणित्थको आदि ले विद्वानोंने कहा है ॥ २१ ॥

अथ सलिले जन्मज्ञानम्

आप्योदयमाप्यगः शशी संपूर्णः समवेक्षतोऽपि वा ।
मेषूरणबन्धुलग्नगः स्यात्सूतिः सलिले न संशयः २२

जलचर लग्नमें जन्म हो अर्थात् कर्क मकरका परार्ध मीन इन जलराशियोंमेंसे कोई राशि लग्नमें स्थित हो

और पूर्णचन्द्रमा भी जलचरराशिमें स्थित हो तो जलके किनारे जन्म कहना अथवा लग्नमें स्थित जलचर राशिको पूर्ण चन्द्रमा देखता हो तो द्वितीययोग। अथवा जलचरराशिमें स्थित चन्द्रमा दशम वां चतुर्थ वा लग्नमें स्थित हो तो भी निश्चय करके जलके किनारे जन्म कहना ॥ २२ ॥

अथ जन्मदेशज्ञानम्

चरे भांशचारेण तुल्ये पथि स्यात्प्रसूतिः स्थिरे स्वर्क्षगैः खेचरेन्द्रैः। निजांशस्थितैः स्वीयगेहेस्थ वीर्यात्फलं भांशयोर्होरिकेन्द्रा वदन्ति ॥ २३ ॥

जन्मलग्नमें जिस राशिके नवांशका उदय हो उस राशि या नवांश राशिके सदृश अर्थात "शेषाः स्वनामवत्परे" प्राणी जिस स्थानमें वास करता हो उसी स्थान में जन्म कहना चाहिये और जो वह राशि जन्मलग्नकी हो अथवा नवांश राशि चरसंज्ञक हो तो उसके तुल्य प्राणी जिस मार्गमें विचरता हो तो उसी मार्गमें जन्म कहना चाहिये, जो स्थिरसंज्ञक जन्म लग्न नवांश हो तो उस प्राणीके घरमें जन्म कहना चाहिये और द्विस्वभावसंज्ञक जन्म लग्न नवांश दोनों हों तो उस प्राणीके घरके

बाहर का जन्म कहना। जो जन्मलग्नमें अपनी राशिके नवांश का उदय हो तो उसके समान प्राणीके घरमें जन्म कहना। जहां लग्नपर राशि नवांश राशि पृथक् हो तो उनमें जो बलवान हो उसीके योगसे जन्मका स्थान कहना चाहिये॥ २३॥

अथ जन्मगृहज्ञानम्

तातांबाभवनेषु तद्बलवशान्नीचस्थितैः साधुभिः।
सूतिः स्यात्तरुशालकादिषु तदायद्वातरोराश्रितम्॥२४

पूर्वोक्त पितृसंज्ञक पितृव्यसंज्ञक अर्थात् जो बालक दिनमें उत्पन्न हो तो सूर्य उस बालकका पिता और शुक्र माता है। रात्रिमें उत्पन्न हो तो शनि पिता, चन्द्रमा माता है और दिनमें उत्पन्न हो तो शनैश्चर पितृव्य अर्थात् पिताका भाई और चन्द्रमा मातृष्वसासंज्ञक अर्थात् मौसी है। रात्रिमें जन्म हो तो उस बालकका सूर्य पितृव्यसंज्ञक और शुक्र मौसी है। इन सब ग्रहोंमें जो सबसे बलवान् हो उसीके घरमें बालकका जन्म कहना, जो पितृसंज्ञक बलवान् हो तो माताके संबंधियोंके घरमें और पितृव्यसंज्ञक बलवान् हो तो पिताके भाई या बूआके घरमें और मातृष्वसासंज्ञक बल-

वान् हो तो माताकी बहिन या मामा आदिके घरमें जन्म कहना और संपूर्ण शुभ ग्रह अपने नीच स्थानमें स्थित हो तो उस बालकका जन्म साधुके स्थान वा वृक्षों के नीचे मकानमें अथवा बगीचेमें या इसके समीप जन्म कहना चाहिये ॥ २४ ॥

अथ द्विशालादिगेहे जन्म

चेत्तुङ्गादधिकोनकेऽथ परमोच्चांशस्थिते वा गुरुः
खस्थद्वित्रिचतुर्थभूमिकमदः कुर्यात्तदा मंदिरम् ।
एवं वीर्ययुते शशाङ्कनगते तद्वत्त्रिशालं गृहं चेदन्येषु
समर्थकेषु सुधिया वाच्यं विशालं गृहम् ॥२५॥

जन्मलग्नसे दशमस्थानमें बृहस्पति कर्कराशिमें स्थित अपने परमोच्चभागमें बैठा हो अर्थात् दो वा तीन अंशके भीतर बृहस्पति हो तो उस बालककी उत्पत्ति दुमहले मकान पर कहना और दशमस्थानस्थित कर्कराशिवर्ती बृहस्पति तीन अंशके ऊपर और चर अंशके भीतर स्थित हो तो तिखने मकान पर सन्तानोत्पत्ति कहना। पूर्वोक्त बृहस्पति चार अंशसे और पांच अंशके मध्यवर्ती स्थित हो तो चारखनके मकानमें सन्तानोत्पत्ति कहना जो बृहस्पति धनराशिवर्ती दशमस्थानमें स्थित हो तो

उस बालककी उत्पत्ति तीन खन के मकानमें कहना। पूर्वोक्त बृहस्पति मीन, मिथुन, कन्या राशिवर्ती दशम-स्थानमें स्थित हो तो भी उस बालककी उत्पति दुमहले मकानमें कहना चाहिये परंतु यह योग बड़े शहरोंमें वा राजा रईसोंके यहां विचार कर कहना ॥ २५ ॥

अन्धकारे जन्मज्ञानम्

मन्दर्क्षांशे शशिनि हिबुके मंददृष्टेऽब्जगे वा
तद्युक्ते वा तमसि शयनं नीचसंस्थैश्च भूमौ।
यद्वद्राशिर्व्रजति हरिजं गर्भमोकस्तु तद्वत्
पापैश्चन्द्रात्स्मरसुखगतैः क्लेशमाहुर्जनन्याः॥२६॥

जिस प्राणीके जन्मकालमें चन्द्रमा चाहे किसी राशिमें स्थित हो परंतु शनैश्चरके नवांशमें हो तो बालक के माताकी खाट अंधेरेमें कहना, प्रथम लग्नमें चौथे स्थानमें चंद्रमा हो तो भी बालकका जन्म अंधेरेमें कहना अथवा किसी स्थानमें स्थित चन्द्रमाको शनैश्चर देखता हो तो भी पूर्वोक्त फल कहना या किसी राशिमें स्थित चंद्रमा कर्कवा मीनके नवांशमें स्थित होतो भी अंधकार में जन्म कहना, शनैश्चरयुक्त चंद्रमा किसी राशिमें स्थित हो तो भी अंधकारमें जन्म कहना और इन

पूर्वोक्त योगोंमें चन्द्रमा, सूर्य देखता हो या सूर्यसहित हो तो दीपकादिके प्रकाशमें जन्म कहना, इसी तरह गर्भाधानकालमें भी विचार कर लेना जो प्रसव कालके समय अंधकार न हो तो यह जान लेना कि बालककी उत्पत्तिके समय घबराहटसे दीपक उठाया था; सो दीपक बुझ गया होगा। दूसरा एक दीपक बाल लिया होगा ॥ २६ ॥

भूमिशयनज्ञान

जो तीन ग्रहोंसे अधिक अपने नीच स्थानमें स्थित अथवा नीचके नवांशमें स्थित हों तो बालककी उत्पत्ति चटाई बिछाई हुई भूमि अथवा तृणादिके ऊपर होनी चाहिये और उसीपर माता और प्रसवका शयन भी होना चाहिये, जन्म लग्नमें जो राशि स्थित हो उसको जिस प्रकारकी पृथ्वी मिली हो तैसी ही भूमिमें बालककी उत्पत्ति कहनी चाहिये, केवल आकाशसंबंधी भूमिको त्याग देना चाहिये ।

मातृकष्टज्ञान

जो चंद्रमा पापग्रहसहित हो करके लग्नसे चतुर्थ व सप्तम स्थित हो तो प्रसवकालमें माताको क्लेश कहना ॥

अथ कष्टकालज्ञानम्

पापाधिकारे तु घटी मुहूर्त्तः स्याद्दृष्टपातेऽथ युतौ तु पापौ द्यूने चतुर्थे प्रविचार्य सम्यग्वाच्याऽतिपीडा जनने जनन्याः ॥ २७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे सप्तम वा चतुर्थ स्थानमें जो पापग्रहोंसे अधिकार पाया हो तो प्रसवकालके दो घटी पहिले माताको कष्ट हुआ और पापग्रह देखते हों उसी चतुर्थ सप्तम स्थानको और पापग्रहोंने अधिकार भी पाया हो तो प्रसवकालके एक प्रहर पहिले माताको कष्ट हुआ और जितने पापग्रहोंने अधिकार पाया हो उतने प्रहर वा दिन प्रथम माताको कष्ट कहना चाहिये ॥ २७ ॥

अथ दीपज्ञानम्

बलान्वितेऽर्के कुजवीक्षिते चेत्सौरेण वा स्युर्बहवः प्रदीपाः। व्ययस्थितैरन्यखगैः सवीर्यैर्ज्योतिस्तृणैः स्याद्वदतीति गर्गः ॥ २८ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें बलिकरके सहित सूर्य हो और उसको मंगल वा शनैश्चर देखता हो तो प्राणी के उत्पत्तिके समय बहुत दीपक कहना ॥

अथ तृणज्योतिर्ज्ञान

जो अन्य ग्रह बारहवें स्थानमें हो तो पूर्वोक्त योग भी हो तो कहना कि बालकके प्रसवके समय तृण वा काष्ठकी ज्योति करी है ॥२८॥

अथ मातृत्यक्तपुत्रज्ञानम्

आरार्कजयोस्त्रिकोणगे चन्द्रेऽस्ते च विसृज्यतेऽम्बया।
दृष्टे सुरराजमन्त्रिणा दीर्घायुः सुखभाक् च संस्मृतः २९

जिस बालकके जन्मकालमें मंगल, शनैश्चर एक राशिमें स्थित होकर किसी स्थानमें स्थित हो उनसे पंचम नवम सप्तम स्थानमें चन्द्रमा स्थित हो तो उस पैदा हुई संतानको माता त्याग देती है और जो पूर्वोक्त योग चन्द्रमाको बृहस्पति देखता हो तो वह माता करिके त्याग करी हुई संतान दीर्घायु, सुखी, बहुत कालतक रहती है ॥२९॥

अथ मातृत्यक्तमृत्युयोगः

पापेक्षिते तुहिनगावुदये कुजेऽस्ते त्यक्तो विनश्यति कुजार्कजयोस्तथाये। सौम्येऽपि पश्यति तथाविध-हस्तमेति सौम्येतरेषु परहस्तगतोऽप्यनायुः॥३०॥

पापग्रहोंसे दृष्ट चंद्रमा लग्नमें स्थित हो और सप्तम

स्थानमें मंगल हो तो माता करके त्याग किया बालक मृत्युको प्राप्त होता है उसे अथवा पापग्रहोंसे दृष्ट चंद्रमा जन्मलग्नमें स्थित हो वा बारहवें स्थानमें मंगल शनि हो तो माता करके त्याग किया हुआ बालक मृत्युको प्राप्त होता है अथवा पापग्रहोंसे दृष्ट चन्द्रमा लग्नमें हो और उसे शुभग्रह देखते हों तो माता करके त्याग करी हुई सन्तानको जैसे शुभग्रहों करके दृष्ट हो तैसे ही सदृश ब्राह्मणादि वर्णके किसी मनुष्यके प्राप्त होता है अर्थात् चन्द्रमाको देखनेवाला शुभग्रह वा पापग्रह ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र इन चारों वर्णोंमें जिसका ईश हो उसी वर्णके मनुष्यके हाथ लगता है और नाशको प्राप्त होता है। जो चन्द्रमाको बहुत ग्रह देखते हों तो उनमें जो बलवान् हो तैसेही वर्णके मनुष्यके हाथ लगता है। इन पूर्वोक्त-योगोंमें चन्द्रमाको पापग्रह देखते हों और बृहस्पति न देखता हो तो माता करके त्यागा हुआ बालक मृत्युको प्राप्त होता है, अगर बृहस्पति देखता हो तो माताकरके त्यागा हुआ बालक दीर्घायु सुखी होता है ॥३०॥

अथ पितृपरोक्षजन्मज्ञानम्

न प्राग्विलग्नं यदि पश्यतींदुर्ज्ञशुक्रयोर्मध्यगतेऽथ-

वाजे । यमोदये वा कुसितेऽस्तसंस्थे पितुः परोक्षस्य तदा हि जन्म ॥ ३१ ॥

जन्मलग्नको चन्द्रमा नहीं देखता हो तो पिताके परोक्षमें बालककी उत्पत्ति कहना अथवा बुध और शुक्रके बीचमें चन्द्रमा हो तो भी कहना अथवा लग्नमें शनैश्चर हो लग्नको चन्द्रमा न देखता हो तो भी कहना अथवा मंगल सप्तम हो और चन्द्रमा लग्नको देखता हो तो इन योगोंमें बालकका जन्म पिताके परोक्षमें कहना ॥३१॥

अन्यमतम्

तनुर्न वीक्षिते विधौ चरर्क्षकांशसन्धिगे ।
परोक्षसंस्थितस्य वा पितुर्जनुस्तदा भवेत् ॥३२॥

सन्धिगत हो अर्थात् अन्तिम नवांशमें स्थित हो तो उस बालककी उत्पत्ति पिताके परोक्षमें कहना ॥३२॥

अथ पितृमृत्युज्ञानम्

भौमेक्षितावर्कसितौ द्युरात्रौ तदा वदेत्तत्पितरं व्यतीतम् । चरर्क्षगौ भौमयुतेक्षितौ वा तदान्यदेशे जनकस्य मृत्युः ॥३३॥ भौमान्वितः सूर्यसुतश्चरर्क्षे भवेन्निशाजन्म हि मानवस्य । तदा व्यतीतं पितरं च वाच्यमशंकितं तद्विषयांतरे च ॥ ३४ ॥

मंगलकरके दृष्ट सूर्य शुक्र हो, दिन वा रात्रिका जन्म हो तो उस बालकका पिता मृत्युको प्राप्त कहना, दिनमें जन्म हो सूर्यको मंगल देखता हो तो भी कहना, रात्रिका जन्म हो शुक्रको मंगल देखता हो तो उस बालकका जन्म पिताके परोक्ष अर्थात् मृत्युको प्राप्त कहना चाहिये। वही सूर्य, शुक्र, चरराशियोंमें हो, दिन वा रात्रिका जन्म हो पूर्वोक्त मंगल देखता हो तो उस बालकका पिता परदेशमें मृत्युको प्राप्त हुआ कहना ॥३३॥ मंगलकरके सहित शनैश्चर चरराशिमें प्राप्त हो और रात्रिका जन्म हो तो उस बालकका पिता परदेशमें मृत्युको प्राप्त हो गया यह निःसंन्देह कहना चाहिये ॥३४॥

अथ जन्मकाले पितृरोगज्ञानम्

व्ययायसंस्थितौ खलौ विलग्नपे बलोज्झिते।
तुर्यधर्मगौ हि वा पिता रुगर्दितः स वै ॥ ३५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहवें अष्टम स्थानमें पापग्रह हो लग्नपति बलवान् होकर चतुर्थ नवम स्थित हो उस बालकके जन्मकालमें उसका पिता रोगी कहना ॥३५॥

तनौ रवौ बलस्थिते शनौ तदीक्षिते यदा।
पिता रुगर्दितस्तदा कुजेक्षितेऽथवा भवेत् ॥३६॥

लग्नमें सूर्य बलवान् होकर स्थित हो, शनैश्चर उसको देखता हो तो संतानके उत्पन्नकालमें उसका पिता रोगी कहना अथवा लग्नस्थ सूर्यको मंगल देखता हो तो भी उस बालकके पिताको रोग कहना ॥३६॥

अथ मातृपितृमृत्युज्ञानम्

यत्र यत्र स्थितो भानुर्मंदाराभ्यां समन्वितः ।
पितरं जन्मतः पूर्वं निर्वृत्तं नात्र संशयः ॥ ३७ ॥

जन्मकालमें चाहे किसी स्थानमें शनैश्चर मंगलकरके सहित सूर्य कहीं स्थित हो तो संतानके जन्मसे पहिले बालकका पिता मृत्युको प्राप्त कहना चाहिये ॥३७॥

अथ मातृपितृमृत्युज्ञानम्

मन्दस्त्रिकोणगश्चंद्रात्कुर्यान्मातृवधं निशि ।
दिनसे पापसंयुक्तौ दानवज्यस्तथा कुजः ॥३८॥
सुखास्तसंस्थैर्यदि पापखेटैर्मातुः कलिर्वेन्दुयुतैश्च मृत्युः । सूर्याद्यमारौ प्रसवेऽस्तसंस्थौ शुभैरदृष्टौ जनकस्य रिष्टम् ॥ ३९ ॥

चंद्रमासे नौवें पांचवें शनि हो, रात्रिका जन्म हो तो उस बालककी माता मृत्युको प्राप्त होती है; दिनका जन्म हो और पापग्रहोंसे संयुक्त शुक्र मंगल हों, चंद्रमा

से नवम पंचम स्थित हो तो पिता का नाश करे ॥३८॥ जिस बालकके जन्मकालमें चतुर्थ सप्तम पापग्रह हों, चन्द्रमाकरके सहित हो तो माताको मृत्युकारक होता है और चन्द्रमा सहित हो न हो तो भी माताको रोग देता है। सूर्य शनि मंगल जिसके जन्मकालमें सप्तम स्थित हों और शुभ ग्रह न देखते हों तो पिता को रोग देता है ॥३९॥

अन्यच्च-इन्दुतो नवमे धने नैधने पापखेचराः।
अखिलाः पितरं हन्युर्बालं जातं समातृकम् ॥४०॥

चंद्रमासे नवम सप्तम अष्टम जो पापग्रह हो वह संतान अपने पिताका मातासहित नाश करती है ॥४०॥

अथ विदेशस्थपितृबंधनज्ञानम्

क्रूरर्क्षगाः क्रूरखगा यदि स्युर्दिवामणेर्धर्मसुतास्तसं(म) स्थाः। स्थिरादिभेऽर्के जनकोऽन्यदेशे बद्धः स्वभावाद्विषयादिकेषु ॥ ४१ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें क्रूर राशियोंमें पापग्रह स्थित हो और सूर्यसे नवम पंचम स्थित हो तो उस बालकका पिता बन्धनमें कहना और सूर्य स्थिरराशि में स्थित हो तो स्वदेशमें बंधन कहना, चरराशिमें सूर्य

हो तो विदेशमें कहना, द्विस्वभाव हो तो मार्गमें बंधन कहना ॥४१॥

अथ पितृमातृसमबालज्ञानम्

बलान्वितेऽर्के सदृशः स्वपित्रा मात्रा समः शीत-
रुचौ सवीर्ये। त्रिंशांशके यस्य गतो विवस्वान्
वाच्यो गुणस्तत्खचरस्य नूनम् ॥ ४२ ॥

जिस बालकके जन्मसमयमें सूर्य बलवान् हो तो वह बालक पिताके गुणके सदृश होता है। चंद्रमा बली हो तो माताके समान होता है। सूर्य जिस ग्रहके त्रिंशांशमें स्थित हो वह बालक उसी ग्रहके गुणोंकी माफिक होता है। चंद्रमा जिस ग्रहके त्रिंशांशमें हो उसी ग्रहके समान बालकका स्वभाव कहना अर्थात् सूर्य चंद्रमा जो सात्त्विक ग्रहके त्रिंशांशमें स्थित हो वह बालक सात्त्विक स्वभाववाला होता है। सतगुणीके लक्षण यह हैं कि, परजनोंपर कृपा करनेवाला, दीनोंपर दयालु, ब्राह्मण देवता शास्त्र पिता मातादिकोंमें भक्ति रखनेवाला, सत्यवादी, विनय, विद्यावान्, शांतप्रकृतिवाला सतोगुणी पुरुष होता है। जो सूर्य चंद्रमा राजसीग्रहके त्रिंशांशमें स्थित हो तो वह बालक राजसी होता है, काव्य कला

नृत्य गान द्रव्य सवारी दासी स्त्रियोंमें प्रवृत्ति विषयी अभिमानी होता है और अपनी बड़ाईको सुनकर प्रसन्न होनेवाला राजसी प्रकृतियुक्त पुरुष होता है । जो सूर्य चन्द्रमा तामसी ग्रहके त्रिंशांशमें स्थित हो तो वह बालक तामसी स्वभाववाला होता है। तामसीके लक्षण–सदैव क्रोध युक्त रहे, पराये धनका वा स्त्रियोंका हरण करनेवाला, पराये वैभवको देखकर जलनेवाला, आलसी, अभिमानी, दुष्ट वचनको बोलनेवाला, सबको दुःख देनेवाला, मद्यमांसका आहारी तामसी पुरुष होता है । परन्तु सूर्य करके पुत्रका स्वभाव कहना और चन्द्रमा करके कन्याका स्वभाव कहना ॥४२॥

अथ बालकस्य ह्रस्वदीर्घांगज्ञानम्

लग्नस्य नन्दलवपेन समस्तमूर्त्या पादग्रहो बलयुतस्तु तथैव यद्वा । वर्णो विधोर्न बलवेशसमस्तु बुद्धा जातिं कुलं च विषयान् प्रवदेच्च वर्णम् ॥४३॥

जन्मलग्नमें जो नवांश हो तिसको स्वामीकी सदृश मनुष्यके शरीरका आकार कहना । जिस राशिमें पापग्रह बली होकर शरीरके जिस अंगमें स्थित हो उसी अंगको निर्बल कहना और जिस अंगमें शुभ ग्रह बली

होकर स्थित हो उसी अंगको पुष्ट कहना चाहिये। कालपुरुषके अंग मेषादि राशि स्थित हो उनके हिसाबसे अंगको बड़ा छोटा कहना चाहिये। तहां लग्नसे शिर, द्वितीय मुख, तृतीय छाती, चतुर्थ हृदय, पञ्चम वक्षःस्थल, छठा स्थान कमर, सातवां स्थान लिंग, नाभिका मध्य भाग वस्ति है, आठवां स्थान लिंग, नवम अंडकोश, दशमस्थान ऊरू, एकादश स्थान पेटके बीचकी गांठे हैं, बारहवां स्थान जंघा और दोनों पैर हैं। इन अंगों को बड़ा छोटा कालपुरुषके बड़ी छोटी राशिसे कहना। पापग्रह राशियोंको बलहीन अंग कहना, शुभग्रह युक्त राशियों करके बली पुष्ट अंग कहना चाहिये। चन्द्रमा जिस नवांशमें स्थित हो तिसके स्वामीके समान वर्ण स्वरूप कहना चाहिये। यह संपूर्ण फल बुद्धिमान् पुरुष कुल जाति देशोंका विचार करके कहे। यथा निषाद जाति कोल भील इत्यादि जातिके मनुष्योंका श्याम रंग होता है तो उनको वैसाही कहना चाहिये, यथा क्षत्रियोंके कुलमें मनुष्य गौरवर्ण होते हैं उनको गौरही कहना और देशकाल विचार करके भी फल कहना चाहिये। जैसे–कर्नाटक तैलंग विदेह इत्यादि देशोंमें

मनुष्य श्यामवर्ण होते हैं, गौरवर्णके मनुष्य इन देशोंमें कम होते हैं। तैसेही पांचाल कश्मीर गुरंड देश अर्थात् विलायत गुर्जर सिंधु इत्यादि देशोंके मनुष्य गौरवर्ण होते हैं खत्री वा नागर व कश्मीरी, अंगरेज इन मनुष्यों का जातिस्वभाव गौरवर्णका है। यथा मध्यदेशके मनुष्य गौर श्यामवर्ण मिश्रित अथवा दोनों प्रकारके होते हैं तैसे नेपाल खसदेशके मनुष्योंका चपटा मुँह और कुंजी आंख ठिगना कद है और मारवाड़देशीय स्त्रियोंका स्वरूप मध्य वर्ण और पेट बड़ा होता है। इसी तरह अन्य देश वा जातियोंकी माफिक बुद्धिमान् पुरुष विचारकर फल कहना चाहिये ॥४३॥

अथ मात्रा सह मृत्युयोगः

लग्नाष्टरिपुजामित्रे रिःफस्थैः पापखेचरैः ।
सुतेन सार्द्धं जननी म्रियते नात्र संशयः ॥ ४४ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें लग्न अष्टम छठे सप्तम बारहवें स्थानमें जो पापग्रह स्थित हों तो वह स्त्री अपने पुत्र सहित शीघ्र मरणको प्राप्त होती है ॥४४॥

अथ पुत्र-मातृनष्टयोगः

षष्ठान्त्यगेषु पापेषु माता जीवेन्न वै सुतः ।
लग्नाष्टसप्तमस्थेषु माता नश्येन्न वै सुतः ॥ ४५ ॥

छठे बारहवें जिस बालकके जन्मकालमें पापग्रह स्थित हो तो उस बालककी माता जीती रहे और पुत्र क्षीण हो जाय ॥ मातृनष्टयोग-जिस बालकके जन्मकालमें लग्न अष्टम सप्तम स्थानोंमें पापग्रह सहित हो उस बालककी माता मर जाती है, बालक जीता रहता है ॥४५॥

अथोपसूतिकासंख्याज्ञानम्

लग्नाभ्यन्तरसंस्थितैर्दिविचारैस्तुल्या वदेत्सूतिका
बाह्याभ्यंतरदृश्यकोदितदलेऽप्येवं तु मध्यस्थितिः ।
पूर्वार्द्दृश्यदलेऽपि बाह्यनुदिते चक्रस्य सौम्यैः शुभो
रूपाढ्याःखलखेचरैस्तु बलिना मिश्रैर्विमिश्रा
बुधैः ॥ ४६ ॥

लग्नसे लेकर जिस स्थानमें चन्द्रमा स्थित हो उसके बीचमें जितने ग्रह स्थित हों, उतनी ही स्त्रियां उस सन्तान उत्पन्न करनेवाली स्त्रीके पास कहना । जितने ग्रह दृश्य चक्रार्द्ध अर्थात् सप्तम स्थानसे लेकर लग्नपर्यंत

स्थित हों उतनी ही स्त्रियां सूतिप्रसवस्थानसे बाहर कहना चाहिये। जितने ग्रह अदृश्य चक्रार्द्ध अर्थात् लग्नसे लेकर सप्तमभावपर्यंतमें स्थित हों तो उतनीही औरतें प्रसवस्थान के भीतर कहनी चाहिये। जो अदृश्य चक्रार्धमें वा दृश्यचक्रार्धमें शुभ ग्रह स्थित हों तो वे औरतें शुभ रूपवान भूषणयुक्त, उन ग्रहोंके समान गुण, वर्ण, रंग, भूषण, वस्त्र, अवस्था, विधवा सौभाग्यवती कहना चाहिये। पापग्रह बलवान् होकर चक्रमें स्थित हो तो उसी सदृश कहना योग्य है और जो शुभ ग्रह दोनों स्थित हों तो मिश्रितफल कहना चाहिये ॥४६॥

अथ द्विगुणात्रिगुणोपसूतिका:

वक्रोच्चसंस्थैस्त्रिगुणाः स्वराशौ दृक्के नवांशे
द्विगुणाः स्वबुद्ध्या। नीचेऽस्तगेऽर्द्धं ह्युपसूति-
काख्या होराविदैर्द्वित्रिगुणे सकृद्वा ॥ ४७ ॥

जो ग्रह अपने उच्चस्थानमें स्थित हो अथवा वक्री हो चक्रमें स्थित हो तो त्रिगुण स्त्रियां सूतिकागृहके बाहर भीतर कहनी चाहिये। जो ग्रह अपनी राशिमें वा अपने द्रेष्काणमें नवांशमें स्थित हो तो अपनी बुद्धिकरके उपसूतिका द्विगुण कहनी चाहिये। जो ग्रह अपनी नीच-

राशिमें वा नीचनवांशमें वा अस्तंगत हो तो चक्रमें स्थित ग्रहोंसे उपसूतिका आधी कहनी चाहिये क्योंकि ज्योतिषीलोगोंने ऐसा कहा है कि जहां बहुत वार द्विगुण पाया जाय तहां एकही वार द्विगुण करना चाहिये और जहां बहुत वार त्रिगुण पाया जाय तहां एकही वार त्रिगुण करना चाहिये। ऐसा लिखा है कि "एकं तु यद्भूरि तदेव कार्यम् ॥ सकृच्च द्विगुणं पदम्" इति ॥ ४७ ॥

अथ गृहमध्ये सूतिकागृहज्ञानम्

तुलालिकर्काजघटे स्थितिःस्यात्स्थितिर्भवेच्छक्रककुप्क्रमेण । मृगास्यहर्योर्वृषभेण चापि कन्यानृयुग्भांत्यशरासनाख्यैः ॥ ४८ ॥

तुला वृश्चिक कर्क मेष कुंभ इन राशियोंमेंसे कोई राशि भी लग्नमें स्थित हो अथवा इन राशियोंके नवांश लग्नमें स्थित हों तो घरमें पूर्वकी तरफ सूतिकागृह कहनी चाहिये। मकर सिंह इनमें कोई राशि लग्नमें स्थित हो अथवा इन राशियोंका नवांश लग्नमें हो तो दक्षिणकी तरफ स्थानमें सूतिकागृह कहना योग्य है। वृष लग्न वा वृषका नवांश लग्नमें हो तो घरमें पश्चिमकी तरफ सूतिकागृह कहना चाहिये और जो कन्या मिथुन मीन धन इन

राशियोंमेंसे कोई राशि लग्नमें स्थित हो अथवा इनका नवांश लग्नमें हो तो उत्तरकी तरफ मकानमें सूतिकागृह कहना चाहिये ॥ ४८ ॥

अथ सूतिकागृहचक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि.
पूर्वभाग.	पश्चिमभाग.	उत्तरभाग.	पूर्वभाग	दक्षिणभाग.	उत्तरभाग.	पूर्वभाग.	पूर्वभाग.	उत्तरभाग.	दक्षिणभाग.	पूर्वभाग.	उत्तरभाग.	स्थान. भाग. दिशा.

अथ सूतिकागृहद्वारज्ञानम्

द्वारं केन्द्रस्थैर्ग्रहैर्वीर्ययुक्तैर्ज्ञेयं नैवं चेत्तदा लग्नगेहात् । दृश्यो भागो वाममङ्गं निरुक्तं यो वा दृश्यो दक्षिणाङ्गं मुनीन्द्रैः ॥ ४९ ॥

लग्नादि चारों केंद्रोंमें स्थित ग्रहोंके क्रमसे सूतिकागृहका दरवाजा कहना चाहिये अर्थात् केंद्रमें जो ग्रह स्थित हो उस ग्रहकी जो दशा कही है उसी दिशाके सामने सूतिकागृहका द्वार कहना तथा सूर्यकरके पूर्वको, शुक्रकरके अग्निकोण, मंगलकरके दक्षिण, राहुकरके नैर्ऋत्य, शनैश्चर करके पश्चिम, चन्द्रमाकरके वायव्यकोण, बुधकरके उत्तर दिशा, बृहस्पति करके ईशानकोण कहना

चाहिये। यथा "रविः शुक्रो महीसुनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधुः। बुधो बृहस्पतिश्चैव दिशां चैव तथा ग्रहाः" इत्यमरः। अन्यत्र वराहः—"प्रागाद्या रविशुक्रलोहिततमःसौरीन्दुवित्सूरयः।" जो चारों केंद्र अर्थात लग्न चतुर्थ सप्तम दशममें कोई ग्रह न स्थित हो तो जन्मलग्न जिस जिस दिशाकी स्वामी हो उसी दिशाके तरफ मकानका दरवाजा कहना अथवा लग्नादि केंद्रोंमें बहुतसे ग्रह स्थित हों तो उनमें जो अधिक बली हो उसी ग्रहकी दिशाके सामने सूतिकागृह कहना चाहिये ॥ ४९ ॥

अथ वामदक्षिणद्वारज्ञान

पूर्वोक्त केंद्रमें स्थित ग्रह दृश्यचक्रार्धमें स्थित हों तो सूतिकागृहके बांई तरफको मकानका द्वार कहना और जो अदृश्यचक्रार्धमें स्थित हो तो सूतिकागृहसे दहिनी तरफ मकानका दरवाजा कहना चाहिये ॥

अथ गृहस्वरूपज्ञानम्

संस्कारितं तु जरितं रविजे कुजे तु दग्धं च काष्ठसहितं न दृढं खरांशौ। रम्यं नवं भृगुसुते शशिजे विचित्रं सौमं नवं च धिषणे सुदृढं गृहं स्यात्॥५०॥

जिस बालकके जन्मकालमें सब ग्रहोंसे शनैश्चर बली हो तो सूतिका घर मरम्मत किया हुआ पुराना कहना और जो सब ग्रहोंसे मंगल बली हो तो जला हुआ सूतिकागृह कहना, सूर्य बली हो तो काष्ठकरके सहित कमजोर सूतिकागृह कहना, जो शुक्र बलवान् हो तो रमणीक मनको प्रसन्न करनेवाला नवीन गृह कहना योग्य है और बुध बली हो तो विचित्र शोभायमान, चित्रकारी करा हुआ अथवा बहुत तसवीरोंसहित मकान कहना चाहिये, चन्द्रमा बलवान् हो तो नया सूतिकागृह कहना चाहिये, बृहस्पति बलवान् हो तो बहुत मजबूत सूतिकागृह कहना। इन ग्रहोंके वाम दक्षिण जो ग्रह स्थित हों तो पूर्वोक्त रीत्यनुसार सूतिका घरके समीपके घरोंका फल कहना चाहिये परन्तु पूर्वोक्त गृह लग्नस्थ हों तो बहुत ठीक फलादेश मिलेगा ॥ ५० ॥

अथ सूतिकाशय्याज्ञानम्

द्वौ द्वावजाद्या किल राशयः स्युः प्राच्यादितो

व्यङ्गगृहं विदिक्षु । शय्या प्रवाच्याप्यथ वा यथा स्याद्राहुस्तथैवेति वदन्ति केचित् ॥ ५१ ॥

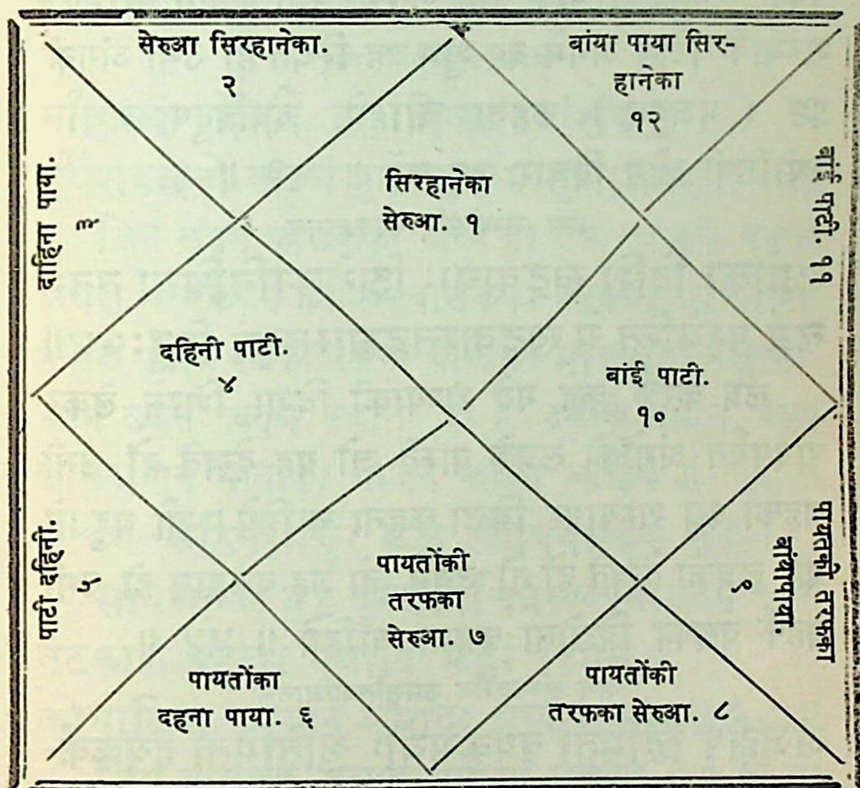
मेषादि दो दो राशियोंको क्रमसे सूतिकाघरमें पूर्वादि दिशाओंमें सूतिकाकी शय्या कहनी और द्विस्वभावराशिके क्रमसे आग्नेयादिकोणमें सूतिका शय्या कहनी योग्य है अथवा मेष, वृष इनमेंसे कोई राशि लग्नमें स्थित हो तो पूर्वदिशामें शय्या कहनी और मिथुन राशि जन्मलग्नकी हो तो अग्निकोणमें शय्या कहनी, कर्क सिंह इनमेंसे कोई राशि लग्नमें स्थित हो तो दक्षिणदिशामें शय्या कहनी, कन्या लग्न हो तो नैर्ऋति कोणमें कहना, तुला वृश्चिक लग्नमें स्थित हो तो पश्चिमदिशामें शय्या कहना, धन लग्न हो तो वायव्यकोण कहना, मकर कुंभ राशि लग्नमें हो तो उत्तरदिशामें शय्या कहना, मीनराशि लग्नमें हो तो ईशानकोणमें शय्या कहना और कोई आचार्य ऐसा भी कहते हैं कि, जिस स्थानमें राहु स्थित हो उसी स्थानमें सूतिकाकी शय्या कहनी चाहिये । "यत्र राहुस्तत्र शय्याः स्युः" ॥ ५१ ॥

अथ खट्वाङ्गज्ञानम्

शीर्षस्यांघ्रिर्दक्षिणं विक्रमर्क्षं वामः पादो द्वादशर्क्षं विचिन्त्य। एवं षष्ठं धर्मभं दक्षवामौ खट्वाङ्गानां निर्णयो वै स्वबुद्ध्या ॥ ५२ ॥

लग्नादि द्वादश भावोंमें क्रमसे शय्याके अंग जानने अर्थात् जिस लग्नमें जन्म हो उस लग्न राशिकी जो दिशा कह आये हैं उस दिशाको सूतिकाका सिरहाना कहना। लग्न, द्वितीय ये भाव खाटके सिरहानेके हैं। तीसरा स्थान सिरहानेका दहिना पाया है। चतुर्थ, पंचम स्थान दहिनी पट्ट शय्याकी है और छठा स्थान शय्याका पायँतकी तरफका दहिना पाया है। सातवां आठवां स्थान शय्याकी पायंत है। नवम स्थान पायंतकी तरफका बांया पाया है। दशम, एकादश स्थान शय्याकी बांई पट्टी है, बारहवां स्थान शय्याका सिरहानेकी तरफका बांया पाया है। यह खाटके अंग अपनी बुद्धिसे इस जगहपर कहने ॥ ५२॥

अथ खट्वाङ्गचक्रम्



अथ खट्वाङ्गघातज्ञानम्

खट्वाङ्गे यत्र पापिष्ठास्तत्र घातस्तु तत्समः ।
वक्तव्यो दैवविदुषा वित्ततत्वद्विरूपभैः ॥८३॥

शय्याके जिस अंगपर पाप ग्रह स्थित हो उसी स्था-

नको अर्थात् शय्याके उसी अंगको घात कहना चाहिये। शय्याके जिस अंगमें वह शुभ ग्रह स्थित हो उसी अंगको पुष्ट (मजबूत) कहना चाहिये, दैवविदुष अर्थात् ज्योतिषी लोग विचार कर कहें ॥ ५३ ॥

अथ शय्योपरि वस्त्रज्ञानम्

लग्नोक्ता दिशि खट्वायाः शिरोङ्घ्रिनिधिया ततः।
लग्नं पश्यन्ति ये खट्वास्तद्वस्त्रास्तरणं विदुः५४॥

लग्न करके कहे गये शय्याकी दिशा शिरसे लेकर पादपर्यंत अंगोंको लग्नके वास्ते जो ग्रह देखते हों उसी ग्रहका वस्त्र शय्यापर बिछा कहना चाहिये। जो बहुतसे ग्रह लग्नको देखते हों तो उनमें जो ग्रह बलवान् हो उसी ग्रहके वस्त्रका बिछोना कहना चाहिये ॥ ५४ ॥

अथ लग्नवशेन उपसूतिकाज्ञानम्

अजझषे द्विमिता वृषकुंभयोः श्रुतिमिता हयकर्कटके शराः। मकरयुग्मतुलाधरकन्यकास्त्वलिहरौ त्रिमिता ह्युपसूतिकाः ॥ ५५ ॥

जिस बालकके जन्म कालमें मीन अथवा मेष लग्न हो तो प्रसव कालके समय दो स्त्री, वृष कुंभ लग्नमें जन्म हो तो चार स्त्री, कर्क धनमें पांच, मकर मिथुन तुला

कन्या वृश्चिक सिंह ये जन्मलग्न हों तो तीन स्त्रियां प्रसव कालके समय कहना चाहिये ॥ ५५ ॥

अथ मातृवस्त्रज्ञानम्

मातृवस्त्रं वदेत्तत्र वा विलग्ननवांशपाम् ।
तुर्यैशवस्त्रतो वाच्यं सूतेः प्राङ् मातृभोजनम् ॥५६॥

जिस लग्नमें बालकका जन्म हो उस लग्नेशके वस्त्रको अथवा जन्म लग्नमें नवांशमें बालकका प्रसव हो उस नवांशपतिके समान वस्त्रको कहना चाहिये। मातृभोजनज्ञान-जन्म लग्नसे चतुर्थ स्थान जो है उसीके समान प्रसव कालके पूर्व माताका भोजन कहना चाहिये ॥ ५६ ॥

अन्यच्च-कठिनं मधुरं रूक्षं लेह्यपेयादिकं मृदु ।
सावणाम्लं गुडं दुग्धं विचित्रं स्वल्पभोजनम् ५७॥
वटकाद्यं बहुरसं पेयादि मधुरं हिमम् ।
क्रोधादिना कदशनं सूर्यादेः श्लोकपादतः ॥ ५८ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें जो चतुर्थेश सूर्य हो तो प्रसव कालके पूर्व कठोर मिष्ट रूखा, चंद्रमा हो तो लसदार कोमल दुग्धादिक, चतुर्थेश भौम हो तो सूखा हुआ, अम्ल, गुड़ वा दुग्धका, बुध करके विचित्र थोड़ासा भोजन, चतुर्थेश बृहस्पति हो तो बहुत रस करके संयुक्त पतोड़े

वगैरहका भोजन, शुक्र करके दुग्धादिक मिष्ट पदार्थ शीतल भोजन, शनि करके खट्टे चर्परे मांसादि अथवा भूना अन्न भोजन कहना चाहिये ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

अथ प्रसवस्थाने धातुज्ञानम्

ताम्रं मणिः स्वर्णमतश्च शुक्तौ रौप्यं च मुक्ताफलकं च लोहम् । सूर्यादिभिर्वीर्ययुते प्रवाच्या जांबूनदं स्वर्क्षगते सुरेज्ये ॥ ५९ ॥

जिस बालकके जन्म कालमें सब ग्रहोंसे सूर्य अधिक बली हो तो प्रसव स्थानके विषे तांबा, मंगल बली हो तो सुवर्ण, बुध बलवान् हो तो शीसा वा रांगा या कांसा, बृहस्पति अधिक बली हो तो चांदी, शुक्र बलवान् हो तो मोती, शनैश्चर बलवान् हो तो लोहा और बृहस्पति धन वा मीनराशिका हो तो प्रसव स्थानमें सुवर्ण जादा कहना, लग्नवर्ती हो तो पूरा फल कहना ॥ ५९ ॥

अन्यच्च-दीपः सूर्यादिन्दुतः स्नेहमानं वर्तिर्लग्नादेव-मुक्तं पुराणैः । ज्ञातुं शक्यं मन्दधीभिर्न तस्मा-त्सच्छिष्याणां प्रीतये प्रोच्यतेऽत्र ॥ ६० ॥

सूर्य करके दीपक कहना, चन्द्रमाकरके दीपकका तैल कहना, जन्म लग्नकरके बत्ती कहना इन फलोंको मन्दबुद्धि

शिष्य नहीं जान सकते हैं इस जगह पर सच्छिष्योंके लिये ये फल कहे हैं ॥ ६० ॥

अथ दीपज्ञानम्

खट्वांगे स्याद् भास्करो यत्र तत्र वाच्यो दीपश्चालितं वै चलर्क्षे । वारं वारं द्व्यंगभे चैकवारं तत्रस्थो वै स्यात्स्थिरर्क्षे तु दीपः ॥ ६१ ॥

खाटके जिस अंगमें सूर्य स्थित हो उसी जगह दीपक कहना । सूर्य चरराशि अर्थात् मेष कर्क तुला मकर इन राशियोंपर स्थित हो तो प्रसवकालके समय दीप लिए किसी मनुष्यको घूमता जानो और जो द्विस्वभाव राशि मिथुन कन्या धन मीन इन राशियोंमें स्थित हो तो चलित और स्थापित दो प्रकार अर्थात एक समय दीप उठाया फिर धर दिया जानना और जो सूर्य स्थिर राशि अर्थात् वृष सिंह वृश्चिक कुंभमें स्थित हो तो प्रसवकालके समय दिया स्थिर कहना ॥ ६१ ॥

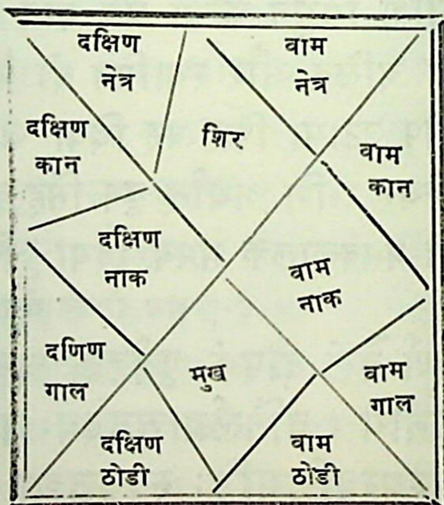
अथ दीपस्य तैलज्ञानम्

पूर्णं तैलं दीपकं पूर्वदक्के चन्द्रे मध्येऽर्द्धं त्रिभागं तृतीये । वर्तिर्लग्नात्तद्वदेवः प्रकल्प्यं वाच्यं सम्यग्बुद्धिमद्भिः स्वबुद्धचा ॥ ६२ ॥

जन्मलग्नमें जिस राशिमें चंद्रमा स्थित हो उस राशि के पहिले द्रेष्काणमें चंद्रमा हो तो दीपक तैलकरके परिपूर्ण दूसरे द्रेष्काणमें स्थित हो तो दीपकमें आधा तैल, तीसरे द्रेष्काणमें हो तो दीपकमें थोड़ा तेल कहना चाहिये अर्थात् जितने अंश राशिके चन्द्रमा भोग कर चुके हों उतने ही अंश तैल दीपकमें कहना चाहिये। दीपस्य वर्तिज्ञान-जन्मकालके समय लग्नके जितने अंश व्यतीत हो चुके हों उतनीही दीपककी वत्ती जली जानो ॥ ६२ ॥

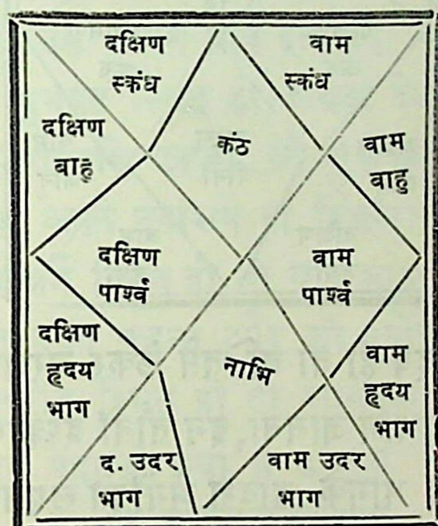
अथ बालकस्य अंगन्यासः

शीर्षहशौ श्रुतियुगं च नसा कपोलौ तस्माद्धनुश्च वदनं प्रथमे हकाणे। कण्ठांसकौ भुजयुगं किल पार्श्ववक्षः क्रोडं च नाभिरिति वा कथितं द्वितीये ६३ वस्तिश्च शिश्नगुदके



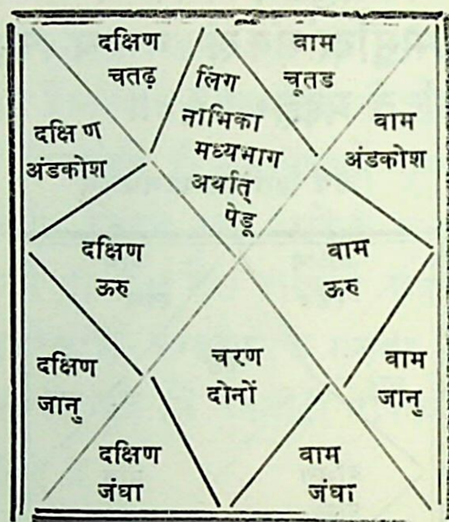
वृषणानुरू च जानुद्वयं च जघने चरणौ तृतीये।
चक्रस्य वामम्मुदितंसकलं नरस्य याम्यं तथा ह्लनुदिनं गदितं ग्रहज्ञैः ॥६४॥

अथ द्वितीयद्रेष्काणचक्रम्



शरीरके तीन हिस्से करना इस प्रकार कि जन्मसमयमें लग्नके पहिले द्रेष्काणका उदय हो तो शिरसे लेकर मुखपर्यंत द्वादश अंगोंका एक भाग जानना, जो द्वितीय द्रेष्काणका उदम हो तो कण्ठसे लेकर नाभि पर्यंत द्वादश अंगोंका दूसरा भाग जानना, जो तीसरे

अथ तृतीयद्रेष्काणचक्रम्



द्रेष्काणका उदय हो तो बस्तिसे लेकर चरणपर्यंत द्वादश अंगोंका तीसराभाग जानना, इन तीनों द्रेष्काणमें जिसका उदय हो उसी भागके द्वादश अंगोंको लग्नादि भागोंमें न्यास करे अर्थात् पहिले द्रेष्काणका उदय तो लग्नादि शिर चक्र देखकर वाम दक्षिण अंगोंको जानना चाहिये वे तीनों द्रेष्काणचक्रकरके बनाये हैं: चक्रका वामभाग कहा सम्पूर्ण मनुष्योंका तैसे दक्षिण भाग कहा ज्योतिष शास्त्रवेत्ताओंकरके ॥ ६३ ॥ ६४ ॥

अथ व्रणमशकादिज्ञानम्

व्रणो भवेत्पयुतेऽत्र सौम्यैः संवीक्षितैर्लक्ष्म तिलस्तु सद्भिः। स्थिरे स्वभांशे सहजस्तदानीमागन्तुकस्तद्विपरीतसंस्थैः ॥ ६५ ॥

कालपुरुषके जिस अंगराशिमें पापग्रह संयुक्त हों वा देखते हों तो उस अंगमें घाव इत्यादि कहना, जिस अंगराशिमें शुभग्रह स्थित हों अथवा देखते हों उस अंगमें तिलमशकादि कहना, जो पूर्वोक्त ग्रह अपनी राशि अथवा अपने नवांशमें वा स्थिरराशि वा स्थिरराशिके नवांशमें स्थित हो तो घाव मशा तिल बालक के संग पैदा हुआ कहना और जो पूर्वोक्त ग्रह उक्तस्थानसे विपरीत स्थित हों तो आगंतुक अर्थात् उस ग्रहकी दशामें पैदा हो गया ॥ ६५ ॥

अथ व्रणमशकादिकारणम्

रवौ काष्ठतुर्यांघ्रिजः सूर्यपुत्रेऽदृषद्वायुजश्चन्द्रजे भूमयश्च। गराग्न्यस्त्रजो भूमिपुत्रे व्रणस्तत्समाङ्गे विधौ शृंगनीराब्जजः स्यात् ॥६६ ॥

जो अंग वा राशि सूर्यसे युक्त वा दृष्ट हो तो काष्ठके लगनेसे वा चतुष्पादजीवोंके काटनेसे अथवा मारनेसे घाव

कहना, शनैश्चर जिस अंग वा राशिमें युक्त वा दृष्ट हो तो पत्थरके लगनेसे वा जलसे अथवा वातसे पैदा हुआ घाव कहना, जो अंग बुधसे संयुक्त वा दृष्ट हो तो धरतीमें गिरने अथवा ईंट वा मिट्टीका ढेला लगनेसे घाव कहना जो अंगराशि मंगलसे संयुक्त वा दृष्ट हो तो अग्निसे अथवा विषका के हथियारसे पैदा हुआ घाव कहना। जो अंग वा राशि चन्द्रमासे संयुक्त वा दृष्ट हो तो सींग वाले जीव अथवा जलमें रहनेवाले जन्तुओंसे घाव कहना और किसी शुभग्रहसे संयुक्त वा दृष्ट हो तो घाव नहीं होता है ॥ ६६ ॥

अथ व्रणमशकादिनिश्चयज्ञानम्

यत्र त्रयः सौम्ययुता ग्रहाःस्युस्तत्र व्रणस्तत्स-मराशिदेशे। तद्वद्रिपुस्थो व्रणकृत् खलो वा स दृष्टियुक्तस्तिललक्ष्मकृत्स्यात् ॥ ६७ ॥

मनुष्योंके जन्मकालमें बांये अथवा दहिने जिस अंग राशिमें तीन ग्रह बुध करके सहित स्थित हों तो उस अंगमें जरूर घाव इत्यादि कहना चाहिये। फिर वे बुधसहित तीनों ग्रह चाहें पाप ग्रह अथवा शुभग्रह हों

इसका कुछ बिचार न करना । उस योगमें जो ग्रह बली हो उसी ग्रहकी दशामें घाव कहना चाहिये । जो पापग्रह लग्नसे छठे स्थानमें स्थित हो और छठे स्थानमें जो राशि स्थित हो, वह कालपुरुषके जिस अंग प्रत्यंग में स्थित हो उसी अंगमें घाव कहना चाहिये । छठे स्थानमें स्थित पापग्रह शुभ ग्रहोंकरके दृष्ट वा संयुक्त हो तो घाव नहीं करते हैं, किंतु तिल मशकादि चिह्न कारक होते हैं, जो वही छठे स्थान स्थित पापग्रह अपनी राशि नवांशमें स्थित हो तो वह घाव वा लक्षण स्वाभाविक अर्थात् संग पैदा हुआ कहना चाहिये । अन्य राशि चर वा द्विस्वभावमें स्थित हो तो व्रण-कारक ग्रहकी दशामें घाव वा लक्षण इत्यादि कहना चाहिये ॥ ६७ ॥

अथान्तरिक्षे जन्मज्ञानम्

धनुर्मीने च कन्यायां मिथुने च विशेषतः ।
अन्तरिक्षे भवेज्जन्म शेषे भूमाविति निर्दिशेत् ॥६८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन वा मीन या कन्या अथवा मिथुन राशिमें विशेष करके हो तो उस बालकका

जन्म अंतरिक्ष अर्थात् धरतीसे ऊंचे स्थानपर कहना चाहिये । शेषराशियोंमें पृथ्वीमें जन्म कहना ॥६८॥

अथ बालकस्य रोदनज्ञानम्

मेषस्त्रयो धनुः सिंहे बालकः खलु रोदिति ।
अर्द्धशब्देन मकरे कन्यायां कुम्भभे तथा ॥६९॥
तुलालिमीनसदने अल्पं च चिरकालतः ।
लग्नचन्द्रवशात्सोऽपि वाच्यं बलविवेकतः ॥७०॥

अथ बालस्य छिक्काज्ञानम्

मेष वृष मिथुन धनु सिंह ये राशि लग्नवर्ती हों तो बालक निश्चय करके पैदा होते ही रोता है । मकर कन्या कुंभ इनमें जन्म हो तो अर्द्ध शब्द अर्थात् पहिले थोड़ा थोड़ा पीछेसे जादा रोता है । तुला वृश्चिक मीन इन राशियोंमें जन्म हो तो पैदा होतेही चुपचाप रहे, पश्चात् बहुत कालतक रोता रहे । यह फल विचार लग्न अथवा चंद्रमाके विचारसे है । इन दोनों में जो बलवान् हो उसी करके फल कहना योग्य है ॥६९॥७०॥

चतुर्थस्थानगश्चन्द्रश्चन्द्रजेन समन्वितः ।
तत्कालजातबालस्तु छिक्कां प्रकुरुते सदा ॥७१॥

जिस बालकके जन्मकालमें चतुर्थ स्थानमें चन्द्रमा

बुध करके सहित स्थित हो तो कहना चाहिये कि पैदा होते ही बालकने छींक करी है ॥ ७१ ॥

अथ मातुल–मातृमातामृत्युज्ञानम्

चन्द्रात्त्रिकोणगे सूर्ये मातुलो म्रियते ध्रुवम् ।
कुजे त्रिकोणगे शुक्रान्मातृमाता विनश्यति ॥७२॥

जिस बालकके जन्मकालमें चन्द्रमासे त्रिकोण अर्थात् नवम पंचम स्थानमें सूर्य स्थित हो तो प्रसव कालके समय बालकका मामा मृत्युको प्राप्त होता है॥ मातृमातामृत्युज्ञानम्–शुक्रसे नवम वा पंचम स्थानमें मंगल स्थित हो तो बालककी मातामही अर्थात् नानी मृत्युको प्राप्त होती है ॥७२॥

अथ मातृपितृधननाशज्ञानम्

सुतस्थाने यदा चन्द्रः सौरिसूर्यकुजास्तथा ।
मातृपितृधननाशः स्वयं जातो न जीवति ॥७३॥

चतुर्थ स्थानमें चन्द्रमा हो, शनि सूर्य मंगल करके युक्त हो तो माता, पिता धन इनका नाशकारक होता है, आप भी क्षीण होता है ॥ ७३ ॥

अथ षडंगुलीयोगः

राहुः सौरिर्यदा भौमः सूर्यश्चैव बृहस्पतिः ।
एते लग्ने भवेज्जन्म वामाङ्गे षडङ्गुली भवेत् ॥७४॥

राहु शनि भौम सूर्य बृहस्पति ये लग्नमें हों तो बायें तरफकी छः अंगुली होती ॥ ७४ ॥

अथ नक्षत्रात्पहिराज्ञानम्

आर्द्राद्द्वादश रूप्याणि ज्येष्ठाद्या नव ताम्रके।
रेवतीत्रीणि हेम्नश्च शेषा लोहः प्रमुच्यते ॥ ७५ ॥

आर्द्रासे बारह नक्षत्र रूपेके पहिरेके होते हैं, ज्येष्ठासे नौ तांबेके, रेवतीसे तीन सोनेके, शेष रहे सो लोहेके जानना ॥ ७५ ॥

अन्यच्च—यथा राहुस्तथा शय्या भौमे खट्वाङ्गभङ्गतः।
रविस्थाने भवेद्दीपः शनिस्थाने तु नालिकम् ७६

जन्मकुंडली लिखना उसमें जिस दिशामें राहु हो उस दिशामें शय्या कहना, जिस स्थानमें मंगल हो उस तरफ खटियाका भंग कहना, सूर्य जिस दिशामें हो उस दिशामें दीपक कहना, जिस दिशामें शनि हो उस दिशामें बालकका नाल कहना ॥ ७६ ॥

प्रसवज्ञानम्

शुभग्रहैः स्वबन्धुगैः सुखेन संयुतः सवः ।
सुताङ्कसप्तमस्थितैः रसग्रहैस्तु कष्टतः ॥ ७७ ॥

प्रसूतिकालमें जन्मलग्नसे दूसरे, चौथे स्थानमें शुभ-

ग्रह हो तो सुखसे प्रसूति कहना । पांचवें नौवें सातवें स्थानमें पापग्रह हों तो कष्टसे प्रसूति कहना ॥ ७७ ॥

अथ जन्मकाले मृत्युकारकयोगः

कृष्णपक्षे दिवा जन्म शुक्लपक्षे तथा निशि ।
तदा रिःफाष्टगश्चन्द्रो मातृवत् परिपाल्यते ॥७८॥

कृष्णपक्षमें दिनका जन्म, शुक्लमें रात्रिका, छठे आठवें बारहवें घरमें चन्द्रमा हो तो वह माताके तुल्य पालता है ॥ ७८ ॥

अन्यच्च-चन्द्राष्टमं च धरणीसुतपञ्चमं च राहुर्नवं च शनिजन्म गुरुस्तृतीये । अर्कस्तु पञ्चभृगुषष्ठ-बुधाश्चतुर्थे जातो न जीवति नरः प्रवदंति संतः ७९॥

जन्मकालमें चंद्रमा अष्टमस्थानमें हो, भौम सप्तम, राहु नवम, शनि लग्न, गुरु तीसरे, सूर्य पांचवें, शुक्र छठे, बुध चौथे ऐसे योगमें उत्पन्न हुआ बालक मरणको प्राप्त होता है ७९॥

चतुर्थे च यदा राहुः षष्ठे चन्द्रोऽष्टमेऽपि वा ।
सद्य एव भवेन्मृत्युः शंकरो यदि रक्षति ॥८०॥

जन्मकालमें चौथे राहु, चन्द्रमा छठे अथवा आठवें

हों बालककी जल्दी मृत्यु होती है। जो शंकर रक्षा करे तो भी न बचे ॥ ८० ॥

क्षीणचन्द्रो व्ययस्थाने पापलग्ने स्मरेऽष्टमे ।
शुभैश्च रहिते केन्द्रे शीघ्रं नश्यति बालकः॥८१॥

जन्मकालमें क्षीणचंद्रमा बारहवें अथवा पापग्रहके स्थानमें हो वा सप्तम अष्टम हो, केंद्र शुभग्रहसे रहित हो तो तत्काल मृत्यु होय ॥ ८१ ॥

दशमस्थो दिवानाथः पापैर्बहुनिरीक्षितः ।
मेषवृश्चिककर्कस्थो सद्यो मृत्युप्रदो भवेत् ॥८२॥

जन्मकालमें सूर्य दशमस्थान मेष वृश्चिक करके इसी राशिमें हो पापग्रहकी दृष्टि हो तो भी बालक तत्काल मृत्यु पावे ॥ ८२ ॥

सप्तमे भवने भौमश्चाष्टमे भार्गवो यदि ।
नवमे भवने सूर्यः स्वल्पायुष्यः प्रजायते ॥ ८३ ॥

लग्नमें सप्तमस्थानमें मंगल, अष्टम शुक्र, नवम सूर्य हो तो थोड़ी आयु होती है ॥ ८३ ॥

क्षीणश्चन्द्रो यदा लग्ने पापश्चाष्टमकेन्द्रगः ।
स्मरेल्लग्नपतिः पापैर्युक्तो नश्येत्तदा शिशुः ॥८४॥

क्षीणचंद्रमा लग्नमें हो, केंद्रमें पापग्रह हो, लग्नेश सप्तम हो पापग्रहसे युक्त हो तो बालककी मृत्यु होती है ॥८४॥

लग्ने क्रूरश्च भवने क्रूरः पातालगो यथा ।
दशमे भवने क्रूरः कष्टं जीवति बालकः ॥ ८५ ॥

क्रूरग्रहका लग्न हो, चतुर्थ स्थानमें क्रूर ग्रह हो वा दशममें हो तो बालकका जीवयोग कष्टसे होता है ॥८५॥

मात्राद्यशुभयोगः

षष्ठे च द्वादशे राशौ यदा पापग्रहो भवेत् ।
तदा मातृभयं विद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः ॥ ८६ ॥

पापग्रह छठे स्थानमें वा द्वादशमें हो तो माताको क्लेश, चौथे दशवें हो तो पिताको क्लेश जानना ॥८६॥

अर्को मन्दः कुजश्चन्द्रः प्रसूतात्पञ्चमे यदि ।
आत्मनः पितरो भ्राता माता चैव तथा क्रमात् ८७॥

जन्मलग्नसे पंचम सूर्य शनि मंगल चन्द्र ये हों तो क्रमसे माता पिता भ्राताको अशुभ कहना ॥८७॥

सप्तमे भवने भानोर्मध्यस्थो भूमिनन्दनः ।
राहुर्व्यये तथैवापि पिता कष्टेन जीवति ॥ ८८ ॥

सप्तमस्थानमें सूर्य, लग्नमें मंगल, बारहवें राहु ऐसे योगमें बालक उत्पन्न हो तो पिताको अरिष्ट जानना ॥८८

अष्टमस्थो यदा राहुः केन्द्रगो नीचचन्द्रमा ।
सद्यस्तस्य भवेन्मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥८९॥

अष्टमस्थानमें राहु, केन्द्रमें नीच चन्द्रमा हो तो शीघ्रही बालककी मृत्यु हो ॥ ८९ ॥

द्वादशस्थो यदा चन्द्रः पापश्चाष्टमगेहगः ।
मासेनैकेन मृत्युः स्यात्तस्य बालस्य निश्चितम् ९०॥

जन्मकालमें बारहवें स्थानमें चन्द्रमा, अष्टममें पापग्रह हो तो एक मासमें मृत्यु जानना ॥ ९० ॥

षष्ठाष्टमे यदा चन्द्रो बुधयुक्तश्च तिष्ठति
विषदोषेण बालस्य तदा मृत्युश्च जायते ॥ ९१ ॥

छठे आठवें घरमें चन्द्रमा हो, बुधकरके युक्त हो तो बालक विषसे मरता है ॥ ९१ ॥

अष्टमे च निशानाथः केन्द्रे क्रूरो यदा भवेत् ।
चतुर्थे च यदा राहुर्वर्षमेकं न जीवति ॥ ९२ ॥

जन्मलग्नमें अष्टम स्थानमें चन्द्रमा हो, केन्द्रमें क्रूर ग्रह हो, चौथे राहु हो तो एक वर्ष पर्यंत अरिष्ट जानना ॥ ९२ ॥

जन्मस्थाने यदा भौमः शत्रुक्षेत्रे यदा भवेत् ।
म्रियते तस्य बालस्य पिता शीघ्रं न संशयः ॥९३॥

जन्मलग्नमें मंगल शत्रुक्षेत्री हो तो बालकके पिताकी मृत्यु जानना ॥ ९३ ॥

लग्नेऽष्टमे यदा राहुश्चन्द्रोऽपि यदि दृश्यते ।
दशाहे जायते तस्य बालस्य मरणं ध्रुवम् ॥९४॥

लग्नमें अष्टम राहु हो, चन्द्रमा उसको देखता हो तो बालककी मृत्यु दश दिनमें निश्चय कहना ॥ ९४ ॥

वक्री शनिर्भौमगृहे केन्द्रे षष्ठाष्टमेऽपि वा ।
कुजेन बलिना दृष्टो हन्ति वर्षद्वये शिशुम् ॥९५॥

वक्री शनि मंगलके क्षेत्रमें हो, केंद्रमें वा छठे आठवें हो, बलवान् मंगल देखे तो दो वर्ष तक बालकको अरिष्ट हो ॥ ९५ ॥

शनिराहुकुजैर्युक्तो सप्तमे नवमे शशी ।
सप्तमे दिवसे हन्ति मासे वा सप्तमे शिशुम् ॥९६॥

शनि राहु मंगल ये तीनों ग्रहोंसे युक्त चन्द्रमा सप्तम स्थानमें अथवा नवममें हो तो सात दिनमें सात मासमें बालकको अरिष्ट जानना ॥ ९६ ॥

दशमे भवने राहुः पितृमातृप्रपीडनम् ।
द्वादशे वत्सरे मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥९७॥

दशवें घरमें राहु हो तो पिता माताको कष्ट और बारहवें वर्षमें बालकको मृत्युतुल्य अरिष्ट जानो ॥९७॥

शनिक्षेत्रे यदा भानुर्भानुक्षेत्रे यदा शनिः ।
द्वादशे वत्सरे मृत्युस्तस्य जातस्य जायते॥९८॥

जन्मकालमें शनिक्षेत्रमें सूर्य हो, सूर्यके क्षेत्रमें शनि हो तो बारह वर्षमें मृत्यु हो ॥ ९८ ॥

जन्मलग्ने यदा भौमश्चाष्टमे च बृहस्पतिः ।
वर्षे च द्वादशे मृत्युर्यदि रक्षति शंकरः ॥ ९९ ॥

जन्मलग्नमें मंगल हो, आठवें घरमें बृहस्पति हो तो बारहवें वर्षमें उसकी मृत्यु हो । जो शंकर भी रक्षा करे तो भी न बचे ॥ ९९ ॥

भौमक्षेत्रे यदा जीवो जीवक्षेत्रे च भूसुतः ।
द्वादशे वत्सरे मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥१००॥

मंगलके क्षेत्रमें बृहस्पति हो, बृहस्पतिके क्षेत्रमें मंगल हो तो द्वादशवर्षमें बालककी मृत्यु होवे ॥ १०० ॥

षष्ठाष्टमस्तथा मूर्तौ शत्रुक्षेत्रे यदा बुधः ।
चतुर्थवर्षे मृत्युश्च बालकस्य न संशयः ॥१०१॥

छठे आठवें मूर्ति लग्नमें शत्रुक्षेत्री बुध हो तो चौथे वर्षमें बालकको अरिष्ट कहना ॥ १०१ ॥

भौमक्षेत्रे यदा जीवः षष्ठाष्टासु चन्द्रमाः ।
वर्षेऽष्टमेऽपि मृत्युर्वै ईश्वरो रक्षिता यदि ॥१०२॥

मंगलके क्षेत्रमें बृहस्पति हो, छठे आठवें घरमें चंद्रमा हो तो निश्चय करके आठवें वर्षमें मृत्यु हो ॥ १०२ ॥

सप्तमे भवने राहुः शत्रुक्षेत्रे यदा भवेत् ।
प्राप्ते च षोडजे वर्षे तस्य मृत्युर्न संशयः ॥१०३॥

सातवें घरमें राहु शत्रुक्षेत्री हो तो सोलहवें वर्षमें मरे ॥ १०३ ॥

उच्चैर्वा यदि वा नीचैः सप्तमस्थो दिवाकरः ।
तदा जातो निहंत्याशु मातरं नात्र संशयः १०४॥

जन्मकालमें मेष या तुलाका सूर्य हो तो माताका नाश हो ॥ १०४ ॥

धनस्थाने यदा भौमो मन्दग्रहसमन्वितः ।
सहजे च भवेद्राहुर्भ्राता तस्य न जीवति ॥१०५॥

धनस्थानमें मंगल हो, शनिकरके युक्त हो, तीसरे घरमें राहु हो तो भाईकी मृत्यु जानना ॥ १०५ ॥

पंचमेशो निशानाथस्त्रिकोणे यदि वाक्पतिः ।
दशमे च महासूनुः परमायुः स जीवति ॥१०६॥

लग्नमें पञ्चमस्थानका पति चन्द्रमा हो, त्रिकोणमें बृहस्पति हो, दशममें मंगल हो तो पूर्ण आयु होती है १०६

मूर्तौ शुक्रबुधौ यस्य केन्द्रे चैव बृहस्पतिः ।
दशमोऽङ्गारकश्चैव स ज्ञेयः कुलदीपकः॥१०७॥

जिसके जन्मलग्नमें शुक्र बुध हों, केंद्रमें बृहस्पति, दशवें घरमें मंगल हो तो वह बालक कुलका दीपक होता है ॥ १०७ ॥

सूर्ये च नवमे तातो माता चन्द्राच्चतुर्थके ।
भामे तृतीयके भ्राता बुधषष्ठे तु मातुलः ॥१०८॥

सूर्य नौवें हो तो पिताको संदेह, चौथे घरमें चंद्रमा हो तो माताको संदेह, मंगल तीसरे घरमें हो तो भाईको संदेह छठे घरमें बुध हो तो मामाको संदेहकारक होता है ॥ १०८ ॥

संध्यायां हिमदीधितिहोरापापैर्भान्तगतैर्मरणाय ।
प्रत्येकंशशिपापसमेतैःकेन्द्रैर्वा स विनाशमुपैति९॥

संध्यकाल व चंद्रमाकी होरा व राशिके अंत्य नवमास में पापग्रहोंकी स्थिति ये सब मिलकर जन्म होनेवाले के मरणके लिये हैं अर्थात् इस योगमें पैदा हुआ बालकादि शीघ्रही मर जाता है, अथवा चंद्रमा व तीन पापग्रह मिलकर ये चारों चारों केन्द्रोंमें स्थित हों अर्थात् प्रथममें एक वा चौथेमें कोई एक व सातवेंमें कोई एक व दशवेंमें कोई एक स्थित हो ऐसे योगमें भी पैदा हुआ बालक शीघ्र मर जाता है ॥ १०९ ॥

चक्रस्य पूर्वापरभागगेषु क्रूरेषु सौम्येषु च कीटलग्ने।
क्षिप्रविनाशंसमुपैति जातःपापैर्विलग्नास्तमयाभितश्च

चक्र अर्थात् लग्नादि बारहभावोंके पूर्बार्द्धमें क्रूरग्रह स्थित हो परार्ध शुभग्रह स्थित हो, वृश्चिक या कर्क लग्न हो ऐसे योगमें पैदा हुआ शीघ्र ही मर जाता है। लग्नके जितने अंश भुक्त हो चुके हैं चौथे स्थानमें उतने

अंशोंको छोड़कर शेष अंशोंसे लेकर दशमें भावमें चतुर्थ के भुक्तांशतक चक्र परार्द्ध कहा जाता है । शेष पूर्वार्द्ध है अथवा पापग्रह लग्न सातवें स्थानके दोनों तरफ स्थित हो अर्थात् बारहवें दूसरे व छठे आठवें स्थानोंमें पापग्रह स्थित हो तो भी पैदा हुआ बालकादि शीघ्र ही मर जाता है और कोई तो यहां दो योग कहते हैं अर्थात् बारहवें दूसरे स्थानोंमें पापग्रह हो तो शीघ्र ही मर जाता है यह एक, छठे व आठवें स्थानोंमें जो पापग्रह स्थित हो तो पैदा हुआ शीघ्र मर जाता है । यह दो, और कोई अन्य अर्थ करते हैं । यथा-लग्न व सातवें स्थानके सम्मुख और दूसरे व आठवें स्थानमें पापग्रह हो तो ऐसे योगमें पैदा हुआ शीघ्र ही मर जाता है और कोई आचार्य इतर अर्थ करते हैं। यथा-लग्न व सातवें स्थानका अभिलाषा करनेवाला पापग्रह अर्थात् बारहवें व छठे स्थानमें पापग्रह स्थित हो तो ऐसे योगमें पैदा हुआ शीघ्र ही मर जाता है ११०

पापुपादयास्तगतौ क्रूरेण यतश्च शशी ।
दृष्टश्च शुभैर्न यदा मृत्युस्तु भवेदचिरात्॥१११॥

पापग्रह लग्नमें स्थित हो और एक पापग्रह सातवें स्थानमें स्थित हो, चन्द्रमा जहां कहीं स्थित हो वहां पापग्रहसे युक्त हो और कोई शुभग्रह चन्द्रमाको न देखता हो तो पैदा हुआ बालक शीघ्र मरणको प्राप्त होता है १११

क्षीणे हिमगौ व्ययगे पापैरुदयाष्टमगैः ।
केन्द्रेषु न शुभाश्चेत्क्षिप्रं निधनं प्रवदेत्तु ॥११२॥

क्षीणचन्द्रमा बारहवें स्थानमें स्थित हो, लग्न वा आठवें स्थानमें पापग्रह स्थित हो, केंद्रमें कोई भी शुभ-ग्रह न स्थित हो तो पैदा हुएका शीघ्र मरण होता है ११२

क्रूरसंयुतः शशी स्मरांत्यमृत्युलग्नगः ।
कण्टकाद्बहिः शुभैरवीक्षितस्तु मृत्युदः ॥ ११३ ॥

क्रूरग्रहसंयुक्त चंद्रमा सातवें व बारहवें व आठवें व लग्न इन स्थानोंमें से किसीमें स्थित हो उसे कोई शुभ-

ग्रह न देखते हों और सब शुभग्रह केन्द्रसे बाहर स्थित हों तो पैदा हुआ शीघ्र ही मर जाता है ॥ ११३ ॥

शनिन्यरिविनाशगे निधनमाशु पापेक्षिते शुभै रथ समाष्टकन्दलमतश्च मिश्रैः स्थितिः। असद्भिरवलोकिते बलिभिरत्र मासं शुभे कलत्रसहिते च पापविजिते विलग्नाधिपे ॥ ११४ ॥

लग्नसे छठे व आठवें स्थानमें चन्द्रमा स्थित हो, उसे कोई पापग्रह देखता हो और शुभग्रह न देखता हो तो पैदा हुएका शीघ्रही मरण होता है अथवा लग्नसे छठे आठवेंसे किसीमें चन्द्रमा स्थित उसे शुभग्रह देखता हो पापग्रह न देखता हो तो वह बालक आठ वर्ष जीता है अथवा लग्नसे छठे व आठवेंमेंसे किसीमें स्थित हो और उसे शुभ वा पापग्रह दोनों मिले हुए देखते हों तो चार वर्ष तक जीता है, जो चंद्रमा शुभग्रहके स्थानमें स्थित हो या कहीं भी स्थित होकर शुभग्रहसे संयुक्त हो तो यह योग नहीं

होता है अथवा छठे आठवेंमेंसे किसीमें चन्द्रमाको छोड़ शुभग्रह स्थित हो और उसे बली पापग्रह देखते हों तो एक महीना पर्यंत जीता है अथवा लग्नेश सातवें स्थानमें स्थित हो किसी पापग्रहसे युद्धमें हार गया हो तो भी पैदा हुआ बालकादि महीना भर जीता है ॥११४॥

लग्ने क्षीणे शशिनि निधनं रन्ध्रकेन्द्रेषु पापैः
पापान्तस्थे निधनहिबुके द्यूनयुक्ते च चन्द्रे । एवं
लग्ने भवति मदनच्छिद्रसंस्थैश्च पापैर्माता सार्द्धं
यदि न च शुभैर्वीक्षितः शक्तिमद्भिः ॥ ११५ ॥

चन्द्रमा क्षीण होकर लग्नमें स्थित हो और आठवें वा केन्द्रस्थानोंमें पापग्रह स्थित हो ऐसे योगमें पैदा हुए का शीघ्र मरण होता है अथवा चंद्रमा पापग्रहों के मध्यमें स्थित होकर आठवें व चौथे व सातवें इन स्थानोंमेंसे किसी स्थानमें स्थित हो ऐसे योगमें भी पैदा हुएका मरण शीघ्र होता है । अथवा इसी तरह पापग्रहोंके मध्यमें

स्थित होकर चंद्रमा लग्नमें स्थित हो उसे कोई बली शुभग्रह न देखते हों और सातवें व आठवें स्थानोंमेंसे पापग्रह स्थित हो ऐसे योगमें पैदा हुआ बालक माता-पिता सहित मर जाता है । जो इसी योगमें बली शुभ-ग्रह चन्द्रमाको देखते हों तो वह सन्तान ही मर जाती है, माता नहीं मरती है ॥ ११५ ॥

राश्यन्तगे सद्भिरवीक्ष्यमाणे चन्द्रे त्रिकोणेऽपि गतैश्च पापैः । प्राणैः प्रयात्याशु शिशुर्वियाग-मस्ते च पापैस्तुहिनांशुलग्ने ॥ ११६ ॥

चन्द्रमा जिस स्थानमें स्थित हो वहां उस राशिके अंत्यके नवांशमें स्थित हो उसे शुभग्रह न देखते हों और पांचवें नवम स्थानमें पापग्रह स्थित हों ऐसे योग में पैदा हुआ शीघ्रही मरणको प्राप्त होता है अथवा लग्नमें चन्द्रमा स्थित हो और सातवें स्थानमें पापग्रह स्थित हो ऐसे योगमें भी शीघ्र मर जाता है ॥११६॥

अशुभसहिते ग्रस्ते चन्द्रे कुजे निधनाश्रिते जननिसुतयोर्मृत्युर्लग्ने रवौ तु सशस्त्रजः । उदयति रवौ शीतांशौ वा त्रिकोणविनाशगैर्निधनमशुभैर्वीर्योपेतैः शुभैर्न युतोक्षिते ॥ ११७ ॥

शुभग्रह अर्थात् शनैश्चर व ग्रस्त अर्थात् राहुसंयुक्त चन्द्रमा लग्नसे स्थित हो और लग्नसे आठवें स्थानमें मंगल स्थित हो ऐसे योगमें पैदा हुआ बालक मातासहित मर जाता है। शनैश्चर व बुध व राहु इन सबोंसे संयुक्त होकर सूर्य लग्नमें स्थित हो और मंगल आठवें स्थानमें हो ऐसे योगमें पैदा हुआ मातासहित किसी हथियारसे मरता है। सूर्य वा चंद्रमा लग्नमें स्थित हों, पापग्रह पांचवें व नववें व आठवें स्थानमें स्थित हों, और बली होकर शुभग्रह उस सूर्य या चन्द्रमाको न देखते हों, न उससे संयुक्त हों ऐसे योगमें भी पैदा हुआ शीघ्र ही मर जाता है ॥११७॥

असितरविशशांकभूतिजैर्व्ययनवमोदयनिधन-
श्रितैः। भवति मरणमाशु देहिनां यदि गुरुणा
बलिना न वीक्षितैः ॥ ११८ ॥

शनि व सूर्य व, चंद्र व, मंगल ये सब ग्रह क्रमसे बारहवां नववां लग्न आठवां इन स्थानोंमें स्थित हों अर्थात् शनि बारहवें स्थानमें, सूर्य नववें स्थानमें, चंद्रमा लग्नमें, मंगल आठवें स्थानमें स्थित हो और ये सब ग्रह जो सबल बृहस्पति करके देखे न जाते हों ऐसे योगमें पैदा हुए शीघ्रही मर जाते हैं ॥ ११८ ॥

सुतमदननवांत्यलग्नरन्ध्रेष्वशुभयुतो मरणाय
शीतरश्मिः। भृगुसुतशशिपुत्रदेवपूज्यैर्यदि
बलिभिर्न युतोऽवलोकितो वा ॥ ११९ ॥

अशुभग्रहसंयुक्त क्षीण चंद्रमा पांचवें वा सातवें वा नववें वा बारहवें वा आठवें वा लग्नमें स्थित हो और

शुक्र बुध बृहस्पति इन सब ग्रहोंमेंसे किसी बली ग्रहसे संयुक्त वा दृष्ट न हो ऐसे योगमें पैदा हुई संतान शीघ्र ही मर जाती है ॥ ११९ ॥

योगे स्थानं गतवति बलिनश्चन्द्रे स्वं वा तनुगृहमथवा । पापैर्दृष्टे बलवति मरणं वर्षस्यांत किल मुनिगदितम् ॥ १२० ॥

जिन अरिष्टयोगोंमें मरणकाल नहीं कहा है उन अरिष्ट योगकारक ग्रहोंमें जो ग्रह बली हो वह जन्मकालमें जिस राशिमें स्थित हो उस राशिमें जब चंद्रमा आता है तब मरण कहना चाहिये। अथवा जन्मकालमें जिस राशिमें चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशिमें चंद्रमा आता है तो मरण कहना चाहिये अथवा यदि चंद्रमा लग्नराशिमें आता है तब मरण कहना चाहिये अथवा वर्षके भीतर जब जिस योगोक्त स्थानमें जाकर चन्द्रमा बली होता है

और पापग्रहोंकरके देखा जाता है तब मरण कहना चाहिये यह मुनियोंने कहा है ॥ १२० ॥

त्रिदशत्रिकोणचतुरस्रसप्तमान्यवलोकयन्ति चरणाभिवृद्धितः । रविजामरेज्यरुधिगाः परे च ये क्रमशो भवन्ति किल वीक्षणेधिकाः ॥ १२१ ॥

तीसरा दशवां पांचवां नौवां चौथा आठवां सातवां इन स्थानोंको अपने स्थानमें स्थित ग्रह दो पाद, एक पाद, तीन पाद पूर्ण दृष्टिसे क्रमसे देखते हैं परन्तु शनि बृहस्पति मंगल सूर्य चन्द्र बुध शुक्र, ये क्रमसे उक्तस्थानको पूर्ण दृष्टिसे देखते हैं। अर्थात् तीसरे व दशवें स्थानको शनि पूर्ण दृष्टिसे और सब ग्रह एक पाद दृष्टिसे देखते हैं और पांचवें नववें स्थानको बृहस्पति पूर्ण दृष्टिसे और सब आधी दृष्टिसे देखते हैं और चौथे आठवें स्थानको मंगल पूर्ण दृष्टिसे और सब पौन दृष्टिसे देखते हैं। सातवें स्थानको सब ग्रह पूर्ण दृष्टिसे देखते हैं ॥ १२१ ॥

इति श्रीआदिगौड़कुलोत्पन्नमिश्रअयोध्याप्रसादविर-
चितम् अयोध्याजातकं समाप्तम् ॥

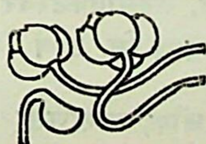
ग्रन्थ बनानेका समय

क्ष्विन्दुद्विवसुचन्द्राब्दे शकाख्ये प्रथिते भुवि ।
अयोध्याजातकं नाम पुस्तकं सपरिश्रमम् ॥ १ ॥

आगरानगरान्तःस्थताजगञ्जनिवासिना ।
श्रीअयोध्याप्रसादेन निरमायि सतां मुदे ॥ २ ॥

दोहा—नगर आगरा विदित है, श्रीकालिन्दी तीर ।
ताजगंजके मध्यमें, मण्डी तूल गहीर ॥१॥

हरहरिपदसेवक वसे, नाम अयोध्या जान ।
विप्रनके उपकारहित, कीनो प्रगट बखान ॥२॥



मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई-४०० ००४